CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ प्रथमात्माकेगुनप्र
थमहोहा ॥ छंदनिरूप्यते ॥ मूल ॥ ॐकारवेदो
तसोध्यात्मतत्वं ॥ प्रनमामनेतंतमार्थं
सार्थं ॥ यानंमयोसम्यकदर्शीनत्वं ॥ सदु
क्तिचरनंचैतन्यरूपं ॥१॥ प्रथ ॥ ॐयंकार
वेदोतसोध्यात्मतत्वं ॥ प्रथमॐयंकारहेयकोवे
दनतोकेसोहेॐयंकारहेयाॐयंकारकहियेप्रा
कारवर्जितनिराकारप्रवगाहनामात्रतुयंसि
कहे ॥ फिरकेसोहेहेयसासुतकहियेप्रनामनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूहरसनकरनित्वकाहियेसहजसर्वदाविराज्
मानहे॥चपना॥फेरकेसोहेहैवलेम्यकचरत्र
काहियेसेम्यकचारित्रकरसंजुक्तहे॥फेरकेसोहै
चेतन्यरूपकरविराजमानहे॥नाकोमेमनवचन
कायाकरहोनोताप्यजोरमस्तककोलगायनम
स्कारकरनहो॥होला॥ॐयंकारजोहैवहेसुध्य
प्रात्मारूप॥केवलरूरसनग्यानजुतताहेनमोवि
रूप॥सीतकाछंद॥ॐयंकारकोमेप्रथमवंदो
सुद्धप्रात्मासारहे॥प्रेमसनतोकरजोरकेनित

॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनहे ॥ नाहे वेहांत नाममे विचारतहो ॥ केसाहेहे
वसोधात्मतत्वं कहिये सुद्धात्मा ॥ मनाति छेहे सोप्र
त्यक्षानिनिश्चा कहिये ॥ नोमसहेवकोनमस्कार
करतहो ॥ नित्ये कहिये सदाकाल ॥ केर्तवार्थेसा
र्थे कहिये तत्व जोहे पदार्थेनाकी सार्थी कहिये ह
वप्रतीत ॥ ए एवंगुणपर्य्यायजान वेकेलाने
एसेदेवकोवंदोहो ॥ फेरकेसोहेदेव ॥ न्यान्मयोसे
म्यक्दर्शनिस्वं ॥ न्यानमयो कहिये ॥ केवलग्यान
मेप्रतिष्ठतहे ॥ वपना ॥ फेरकेसोहेदेव ॥ सम्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर स्वामी॥ परशास्त्र के जीतवे को बडे सूर
वीर हे॥ चपल॥ फिरके से हे॥ नेत्र चलछ कीहये
चार चलछ कर पुनेत्र सेन॥ पुनेत्र पान॥ पु
नेत्र वलवि राजमान हे॥ फिरके से हे महावीर स्वा
मी॥ परसज्झर कर सरीर मोनिष्ट हे॥ घोर चोनी
सघ्रानि सब॥ पुछ पुनलाजे कर संजुक्त हे॥ वीवि
लरुपे कहिये॥ तीन लोक मे पुचहे॥ सुजस हो जि
न को तिन को मेवं दना करनहो॥ का हे को निमित्त मा
लाशुरु बोध्य नत्वे पबो हे॥ मिमालाके शुरु संसे

श्री मा० ३॥

॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नत्वसरधाकारहे॥सेम्यक्रहृष्टीनग्यानसवनि
तहेवतिरुतनराजहि॥सेम्यक्रहृसेनग्यानमय
निनहेवतिरुतनराजहि॥सेम्यक्रचरित्रकोधरे
चैतन्यरुपविराजहे॥रत्न॥नमामिभक्तेश्री
वीरनाथं॥नतंचतुरुद्रदेवेन्द्ररुपं॥मलाशु
नेधोधनतंप्रबोहं॥नमामिहंकेवलनेन
सेवं॥प्रथं॥नमामिभक्तेश्रीवीरनाथं॥नमा
मिभक्तेकतिये मेमलावीरनाथस्वामीकेभक्त
एवंकविनयसहितनमस्कारकरतहो॥केसेहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फेर के सेहे ॥ ध्रुव नासी सुख मे मग्न होके ॥ जीव
न मरन कर रहे तत्रा ॥ फेर के सेहे सिद्ध न गवा न
ध्रम्रर्ति कम्रर्ति कर्ति न चुन न रुप के सन्ना की पु
रुसा कार धिराज मान हे ॥ फेर के सेहे सिद्ध न गवा
न ॥ ध्रीव चल हे ध्रीव कार हे ॥ करने थो सो कर
सुके ना सो थिर हो कर नि हचल न थे ॥ नि छे हे ॥
हो थे से स वा सिद्ध न के ना ई न न स्कार करे हे ॥ हे
हा ॥ न न स्कार न हा वीर को मे वं हो कर जो र ॥
न मो के वली सिद्ध सब को मा लग न जो र ॥ ध्रु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पकरयोरेसेविलासरीतेयेकथनकरेहो॥येपदो
हुंकहियेभव्यजीवनकेसंदेहनिवारणपदयका
रोथजोहेग्यानताकेहोवेकेनिमित्तरचनाकर
तहो॥फिरनमामिहंकेवलनंतसिद्धनमामिहंक
हियेमेकेवलीभगवानतीनकालसंबंधीतिनको
मेनमस्कारकरतहो॥चपना॥फेरअनंतेसि
द्धलोककेविषेसिघरविराजमानहे॥तिनकोमे
वारंवारसीसनवावतहो॥फिरकेसेहैसिद्धभगवा
नअष्टकर्मजीतकेसिद्धक्षेत्रमेविराजमानहे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यापुमानेस्वेष्टरूपेकायापुमानेकहिये॥२
ष्टलहैयकीपुमानहेसोतोपरजार्थीकनयका
रहे॥सोतोविचारहे॥चपना॥फिरकेसोहेष्टल
निरंजनहे॥करमरूपीपुंजनकरहितहे॥फि
रकेसोहेष्टल॥चेतनाकहियेसकलपदार्थन
कोजाननेवालोहे॥नाहेजरबनेसेकहियेहेन
यलपजानोनित्यकहियेसदाकालतमध्याव
हुसारपदार्थकी॥चपना॥फिरेकेसोहेष्टल
ज्ञेयानरूपेकहिये॥केवलज्ञानमनहेमुरतीजि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं ॥ नमोनक्रसहिमस्रावीरनाथ॥सेजुनच
नुष्टपनमनिवास॥नमप्रगटरूपसयजगप्रका
स॥१॥मालाकेगुनगथमनहलास॥नासेसुरपा
नपावेप्रकास॥फेरनमोकेवलीजेअकाल॥सय
सिद्धनमोसेनमनमाल॥२॥मूल॥काबाप्रम
नवेरूलपनेरंजनेचेनमुलमनिवे॥
मावेघूनेवंजेन्यानरूपे॥नेसुद्रिकीसम्य
कधीजे॥छंद॥प्रथमश्रीगुरुवंसप्रकासरूप
कथनकरनेहो॥केसोहेरूनकाथरूप॥का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे सुद्धदृष्टी तेई सम्यक्त्वानहै ॥२॥ सूत्रे ॥ संसा
रदुष्पजेनरविरकै ॥ तेसम्यक्त्वसुद्धं ॥ जिनउक्त
कादृष्टी मिथ्यातमथमोहरागादिखंडे ॥ तेसुद्ध
दृष्टीनरार्थसा ॥ हुं ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ श्रीगुरुभव्यन
कोउपदेसदेहै ॥ कहाकहेहै संसारदुष्पजेनरवि
रकैसंसारदुष्पकैसेये ॥ संसारहुपीसमुद्रकोदुष्प
हुपीजलकरभरेहै ॥ फेरकैसोहै संसारदुष्पछ
यरपारहै ॥ ताकेकहवेकोसामर्थकोईनहीहै ॥
बडोईदुखहै ॥ जेनरविरकैकैसेये ॥ जेनरविरजो

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नकी ने सुद्ध दृष्टी कहिये ॥ सम्यक्ती दृष्टी जिन की ॥
तिन ने सुद्ध जो है ग्यान सो ग्यान पना कहिये सो कहिये पा
रषी ॥ तिन को सम्यक् बीजे को एक रूप पद्मनंदी
ने सो सम्यक् दृष्टी कहिये ॥ दोहा ॥ देह प्रमाण जो
आतमा ने नय विवहार प्रमाण ॥ निश्चय मन कर देषि
ये सुद्ध निरंजन जान ॥ गीतका छंद ॥ काया प्रमा
ण सो आतम रतन सो तो नीव विवहार है ॥ ग्यै की ना
यक कर निरषी ए तो सुद्ध निरमल सार है ॥ चेतनि रं
जन रूप कहिये ॥ घरे केवल ग्यान है ॥ ना को लषे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरनाम ॥ छत्रछिद्र सो माथा कहिये ॥ सोत्र कहिये ॥ जिन
सीकजेकटवाहिक सामग्रीनिकोप्राप्तनीमानेहै ॥ पु
निस्नेह करेहै ॥ सोमोत्र कहिये ॥ राजाहिकषंडकहिये ॥
राजरोषषंडुषराई संसारकेमटकाउनलाहैहै ॥ नासे
रु चारोमलाग्रनिछरोटिनिकोषंडकहिये ॥ नासके
रहेतेसुद्धहिस्त्रीकहिये ॥ भईहैसुद्धहिस्त्रीजिनकोजिन
नजेपैरकहाकरी ॥ नवा ये साईकहिये ॥ नवजो
हेजीवाहिकपदार्थ ॥ तिनकोसरधाकहिये ॥ रुचपत्नी
नीसोसंभ्यकहिस्त्रीकहिये ॥ हेना ॥ विऋतहुषसंसा

॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे मनुष्य सनपुर्वधर्मात्माहे ।। तेसंसारतेविरक्त
हे ।। तेरेपुरुषधन्यहे ।। तेसमयसुद्धकहिये तेईसम
य ।। तेईघरीतिनहीकोसुद्धहे ।। फेरीजिनउक्तहैं
कहिये ।। जेजिनेंद्रबीतरागहेवश्रीश्रुतनगवा
नतिनकेमुषेदेशपेईहैंहि जिनमें ।। फेरीत
नमेंकलाकूरकरी ।। मिथ्यातमयमोरकहिये ।। मि
थ्यातनाम तोश्रुतबकसरधानकाश्रीसान
श्रीसेनहे ।। श्रथवाश्रोरकोश्रोरसरसहेसो मि
थ्यात कहिये ।। मायाकहिये ।। दगावाजीकुटलता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्येंत्रियोंचित्तनिरोधनिवे॥सत्योंत्रियेंकोहिये॥तीनस
त्येमिथ्यातकहिये॥पाखंडीग्रंथनत्वकोसरधानमा
यकीहिये॥इगवाजीवतत्वकपटीवेहनकीहिये॥छ
नपट्धारकेनपकरफलकोमागनाग्रथवा॥प्रा
गमीसुखवांछनामाहीदुखकोमूलहै॥नासेहेन
ध्येतीनसत्यनसेचित्तकोफेरे॥चितप्रतमनको
हरिकलयहूरकरे॥चपना॥फिरग्रेरकलान
जो॥मिथ्यातदेवकहिये जोरागदोषसंजलहोय
ग्रथवाकषायतीव्रहोयसोमिथ्यातदेवकहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमेसंमि कवेतसुजान ॥ मिथ्यातरागसेमायाकमोह
षंडोग्यानऋपान ॥ ४ ॥ गीतकाछंद ॥ सेसाहसेभयभो
तहोमेसाहजिनसुसाधरी ॥ तेसमयसुभयोसुतिन
केजिनउकवानोप्राहरी ॥ मिथ्यातमायामोहसंडोपि
रराग्रादिकरोतिनकीसुद्धरिष्टनई ॥ सोनिमेलनलव
मलसरवनकरो ॥ सत्तं ॥ सम्मोयेयंचितानिरोधनि
त्वं ॥ जिनउकवागीहरे नेधनित्वं ॥ मिथ्यातहेवेगु
रुध्यमेहरे ॥ सद्रूपरुपेतत्तायेसाद्धं ॥ ५ ॥ प्रथ्वी ॥
फिरश्रीगुरुभ्यजीवनकोउपदेशदेतेहैभव्यस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रकेसेहे ॥ पर्याप्तनासीहे ॥ निराकारहे ॥ बाधा
करहितहे ॥ सुखसहाकालसासुनेहे ॥ जीमनम
रनकरहितहे ॥ हमकोमुक्तिकेसुखकेसामर्थनाम
लीहे ॥ केवलीजानेताकोनरकोपसार्थहैनरको
पुसार्थकहिये ॥ नरकहिये मनुष्यजेसनपुर्ष
संम्यकदृष्टीसंसारसेविरक्तहोयकरमोक्ष
केसुखकोसाधेहे ॥ पुरुमोक्षकीईछाकरेहे
तेथ्यहे ॥ चषना ॥ फेरकेसेहे ॥ संम्यकीपुर
सेसंम्यकतुछकहिये जेतत्वनकीपीछचान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रहु मिथ्यागुरु जो लुभ्रर योगसे पुरुषकु मा
रगमेलगा वे खोटो उपदेस देय हिंसा हुइ
सो मिथ्यागुरु कहिये ॥ प्रहु मिथ्याधर्म जो हिं
सा को पुरुषारो होय जीवनकी घात होय सो
ई हिंसा हे ॥ ना नेप्रर हंतेइ बनि रंग्य गुरुस्या
नई ॥ धर्मेई की पुरुषा नी न करे ॥ प्रहु इन सेपुरुषा
मिथ्यात जानतो ॥ ना हे न जोतुम हे भव्य जी
वो मिथ्यात समन पाय ॥ प्रोर नाही नेर कोलो
जानवारो हे ॥ येसो जानके मिथ्यात से हूरहिवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे मेरी॰ आत्मा का कौ स्वरूप के सोहे॥ ध्रुव सुध्यो दृष्टि
कहिये॥ ध्रुव नाम सास्वतो हे॥ सुध्व नाम निरमलेहे ता
को दृष्टि कहिये॥ इस सो॥ आत्मा के स्वरूप को सो सेम्य
दृष्टी कहिये॥ हेल॥ सुख के सुख्य के कारने॥ सेम्य
क सुद्ध धेरय॥ अन्य पापण गादृ ते जो॰ आत्मा ध्यान क
रेय॥ ॥ गीत का छंद॥ जेह क सुख को कारे साधन
सुधा सम कित धारके॥ फिरराग रोष हेरे धीजत
पन्य पापनिवारके॥ निज॰ आत्मा परमात्मो लख के
सुद्ध दृष्टि निहारके॥ तेभये सुध सुगए सिव को तेन

॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रथवा रुचपनौ न होय ।। तौ ग्रात्मा के ग्रस्वरूप को जा
नपनौ सब मेल को त्यागै ।। ग्ररहंत हैं वानैं रागु
दोषु मोहु पीछै मैं इन को दृष्टांत कहेंगे ।। तीसे सम्य
क्दृष्टि कहिये ।। नरु कहिये मनुष्य ।। ऐसौ ग्रा
त्मा को धरै है सो इ सम्यक्दृष्टी कहिये ।। फेरि रा
गु दोषु कहिये ।। रागु ग्ररु होषु संसार को बढ़ाइनहारे है
धर्म के बधावनहारे है ।। इन के बसि चारगति मैं भ
मै है ।। ताते रागु होषु को दूरि करै ।। फेरि ग्रात्मा सुभा
बधु ये सब कहिये ।। ग्रात्मा सुभाव कहिये ।। ग्रात्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहिये॥ सयोहे सुद्ध प्रकास आत्मानके
फिरकेसोहे॥ आत्मासंम्यक ग्यानेचरनेन
सुद्धं॥ संम्यकदरसनसंम्यकचरित्रमय
निश्चेहे॥ फिरनेनसुद्धं नेनजोहे चारचन
द्रयनिनकी विराजमानहे॥ चेपना॥
तत्वार्थसाद्ध कहिये॥ तत्वजोहेपदार्थनि
न कीसरधा कहिये रुचप्रतीती॥ सोनि
सेदृर्सनिसो॥ सेदृर्शीनसे कहिये देखय
तु मदृर्सीनिसं कहियेसदा कोजा॥ होह
कचुलग्यानप्रकासहेसोहे आत्मानसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्षे स्थानके ॥ केवलज्ञानके ये लोकने
ये ॥ सुद्ध प्रकाशे सोभ्यात्मनये ॥ संज्ञ के
ज्ञाने चरनेन दृष्य ॥ नभाषे सा द्वेये से
नेये ॥ ७ ॥ अथ ॥ श्रीगुरुनाम कोइ
पूछे सहेनहे ॥ श्रीकेवलज्ञानि वलोकनये
श्रीकेवलज्ञान कहिये ॥ श्रीनामसो ज्ञानीके
केवलकहिये निर्मलज्ञानना कोप्रकाश
लोकनसने ये लोकनये कहिये ॥ नयजोहे
पदार्थसो केवलज्ञानमे जलकेनये ॥ कि
रसुद्ध प्रकाशे सोभ्यात्मनये ॥ सुद्ध प्रकाशे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥प्रश्ने॥ श्रावकाचारके गुणमे प्रथम सम्य
क्त्व गुण्या गुण्यनकरनहो॥सम्यक्त्व
केहुवेसमस्तो॥सम्यक्त्वकहुंकहिये॥सम्य
क्त्वजोहेसो होयप्रकारहे॥निश्चेयव्यवहारयो
ऽलारसोयटरवसोतेनववेचारसका
यानोयहार्थेइनकीपहिचानकरे॥पछी
सहेषुसम्यक्त्वकेठारे॥श्रद्धानहेवीतर
रेयगुरुदयाधर्मीइनकीप्रतीतनहो
यसोविवहारसम्यक्त्वजानवो॥श्रुतनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

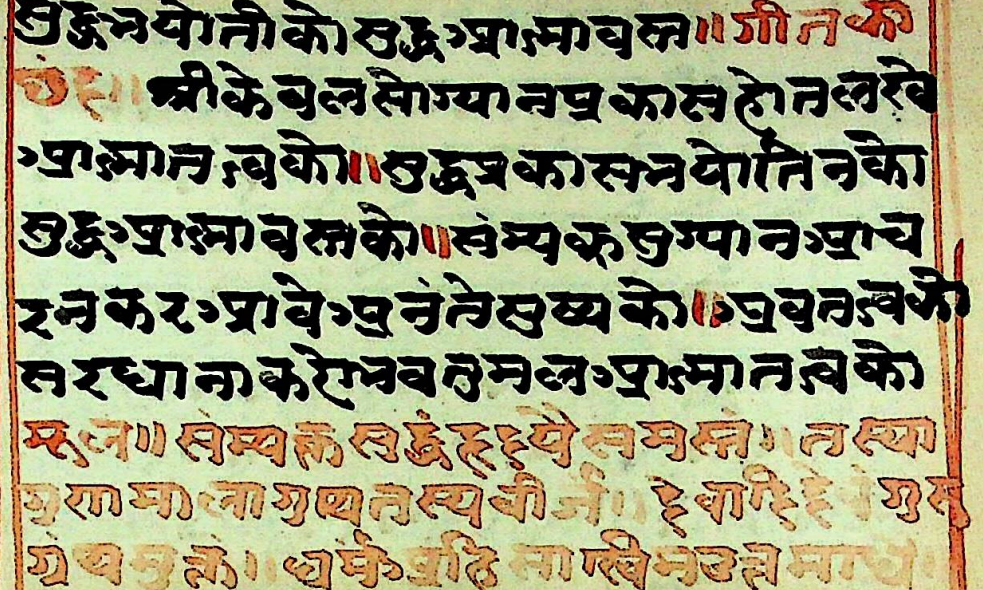

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरुजोहे सोनिरग्रंथ चोरीसभातके पति
ग्रहसोरहितहे॥ फेरके सेहे गुरुर ल्लत्रुरुक
रमोहितहे॥ धर्मोपदेस्याखिमउत्तमाध्य
मकेरधमेजोहे सोदयामईहे साकरवोज
नउत्तमक्षिमाग्राहकेदसप्रकारहे॥ सोये
सेगुरुधर्मकीदृष्टप्रतीतकोधरेसोसाचे
सम्यक्दृष्टीकहिये॥ हेल॥ सम्यक्त्व
धरेहृदेसवमेवडोसुभेर॥ पेलमूल
गुरियागुणोगेरमालगुनकेर॥८॥ गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञेयमेव आत्मा है वा आत्मा गुण आत्मा धर्म जा
नै सो निश्चै सम्यक्ती कहिये ॥ ए से नै दृष्टि श्रु
धि चारि के जानो सो सहज सम्यक्त कहिये ॥
दृष्टि ये सम्यक्त कहिये ॥ ए से सम्यक्त गुण
न सम्यक्त के कहे छ्यालीस भेद हो ॥ तत्व गुण है ।
ति न को गुण न करो ॥ के है वा गै है वे गुण ज्ञेय
सक्ते ॥ है वा गै है वे कहिये ॥ है वे जो है इं द्रीके
ति न करि ग्रहण जानी कहे ॥ ग्रहण ते है वे ॥ ति न
को वे दो हो ॥ चेतना गुण ज्ञेय सक्ते कहिये

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

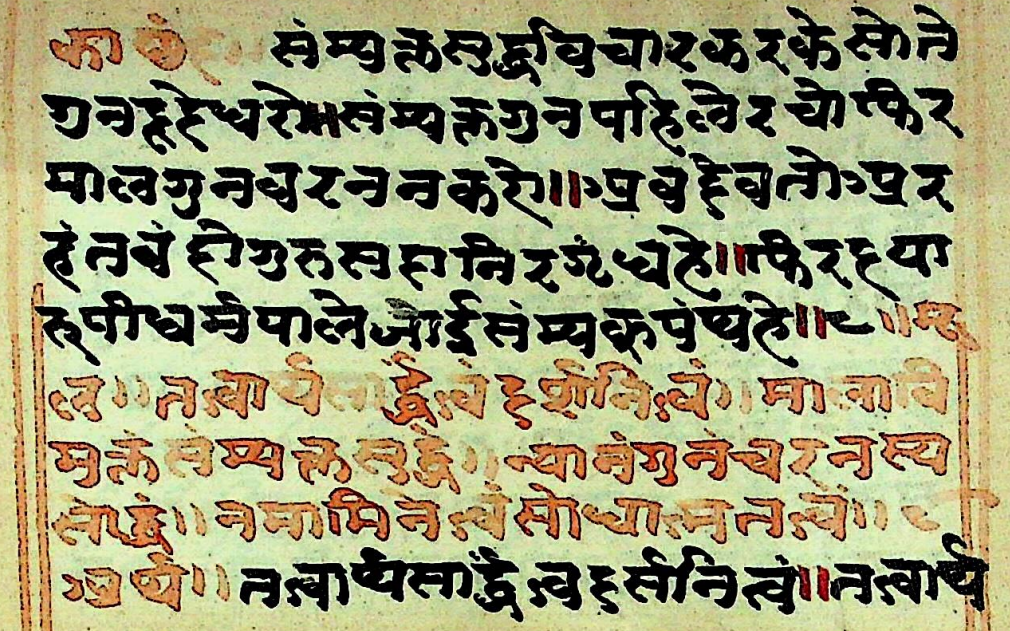

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ प्रास्रव प्रकरण तत्व केसो केसो कहनहो ॥
॥ प्रास्रव हेय प्रकार हे ॥ एक द्रव्य भाव प्रास्रव
दूजो नाम प्रास्रव का हे से कहिये ॥ मिथ्यात ५
प्रवृत्ता ॥ २ ॥ कषाय २५ ॥ जोग ॥ १५ ॥ एसे
ता उन प्रास्रव हे ॥ जीव के पर नाम पुण्य
भव हे सो नाम प्रास्रव कहिये ॥ पुद्गल
की परनव से द्रव्य प्रास्रव कहिये ॥ जीव के
पुद्गल के स्वर्ग कर मन को प्रा गमन
न होय सो प्रास्रव तत्व कहिये ॥ केवल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तिकायरूपहै।फेरकैसोहैजीव।।पुद्गल
निरंजनगुणवनासोसयांसिद्धकारकरनहि
यैजोजीवनमरनकररहितनाचिहरूपैक
हैसोजीवनजानो।।पुद्गलजीवनकालष्ठ
नकहनहै।।पुद्गलजीवजोहैपुद्गलसो
चेतन्यगुनकररहितनहै।।जाइहै।।विनासी
है।।फेरकैसोहैपुद्गलनमनवचनमि
लनसेकुरने।।लघुहिरघ्वोयते।।ग
मनकरेहै।।सोपुद्गलगुजीवनलवकीहैप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काइसपुरीसाजीतेश्रुतइसविधधर्मकोपा
लेवारभावनाभावेसेतानठनकोईसकरके
सेतनितश्रास्रवकोरोकेसोसंवरतत्व क
हिये॥श्रवीनिरंजनतत्वकहतहोकेसोते॥
तपजोतेबारतिनकोपालेश्रुतकरमन
कोखिरावेफेरनोतेमनयाथेसोनिर्जेल
तत्वकहिये॥श्रवमोक्षतत्वकाम्वरू
कोहोसोकहितहो॥श्राठकर्मनको
नासकरे॥श्रष्ठगुनासिद्धजगमेजीवनम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मरूपकहतहै जीवनेपरवैहैवधिक
योहेतोनिसकोउदेखायोहै॥मनमुक्त
नामेइछत्रीनिष्टमानकेनोलषेरागद्वेष
केसंसर्गकरकरमकोबाधोसोबंधनरूपक
हैये॥अबसंसर्गेकरूपकहतहै के
सोहैसंबरजीवकेप्रदेशनकेसंसर्गेक
रकर्मबाधनोलिनकोरतहैकेविनाबे
रागद्वेषनाकरै॥प्रदेशबंधनामरूपैफे
रसंबरकेसोहै॥नेराविध्यचीरत्रकोपालै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यकालभवनकेसोहेसोसुनोपाठफास
सरीरकीहे॥रूपो॥नाही॥नानो॥मीहे॥
रूपो॥नभे॥कठोर॥जेआठगुनसरीर
केहे॥फेरकेसोहे॥पन्द्रयद्रव्यरसपाचगुध
दोयवरनपाच॥येसेविषविकारक्रोधरहे
लोहपीतद्रगलक्षविजानो॥द्रव्यद्रव्यमे
द्रव्यकोलक्षणकहे॥केसोहे॥धर्मद्रव्य
कालभवनचलनागमनहे॥पुद्रगलसर्व
कागुरुजीवकोचलनावेहे॥जेसेपानीमे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नकरंडश्रावकाचार सटीक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कालछन के सोहे सो कहतहो॥ कालद्रव्यको
सो वर्त्तमानलछनहे काहेसे॥ घडीसो घडीना
मिले॥ पलसो पल नामिले॥ पेहरसो पेहरना
मिले॥ नासो एक पइसीहे॥ कालको कायन
हीसो कालरो यप्रकारहे॥ निश्चे व्यहवि
रजलो पलघडी पेहरदीन मास॥ व्यहव
रसकोग्राहेके लाखो करोर संख पद्म पुरव
पल्य सागर जलो सो गिनती मेग्रावेसो
सो विवहार कालकहिये॥ व्यहगिनती मे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मछीजोहे सो मछरीको सहायहोय चलवेसे
पानीविनामछरीना चलसकेतेसेजीवपुद्ग
लधर्मद्रव्यविनाना चलसके॥धर्मद्रव्य
उपचारमात्रसहायकरेहे सोधर्मद्रव्यकहि
ये॥अधर्मद्रव्यकालक्षणकोकहतहे॥
जोपथीजीवकोग्रीष्मकीरितमेछायातरर
मेविस्रामलेयहे॥तेसेहिजीवकोपुद्गल
कोअधर्मद्रव्यथिरनासोउपचारमात्रस
हायकरेसोअधर्मजानवो॥केरकाद्रव्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थे का ज्यरुपकहनहो सोनुभवुको ॥ सम
नचित्तकरा पहाथेकाया गुनचेतनिरुवे ॥ प
रार्थेहेनेकहनहो ॥ परमथे जीवपुद्गपा पुण्य
पया ॥ बंधसंवरनिरजलमोक्षरुनोपद्
र्थेहे ॥ अबपुन्यपदार्थका स्वरुपकहनकर
जो जीवके प्रशस्तरागवर्तै ॥ परहंतदेवनिर
ग्रंथगुरुदयारुधीधर्मपंचपरमेष्ठीभक्तके
भावप्रवर्तै परसीलसंजमदयादानकीर्
यसास्त्रकोपढ़बो ॥ पुण्यासुनबोइनविषे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोहेपाचवएवर्णकोहेये॥सोअनुसमानत
लवलेनेअरुणन्यवएवर्णपरमिलकेनोवए
वर्णजाननो॥अवेरपंचवस्तकायकोस्व
रूपकहतहोसोतुमसुनो॥तामेजीवस्त
कायकेसोहेसोकहतहो॥जीवजोहेसोत्रै
लोकलोकनाथहे॥अस्तीकमस्तनहेलोक
कोसिरहे॥केरकेसोहेजीवअनादिनिधन
होनासनहीहे॥जाकोअनंतसक्तिकोथभी
हे॥अस्तगुनकोलियेहेसोजीवस्तकायक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभावचवर्त्तैसोप्रत्याख्यानहै॥सोपुनरुसकोबंध
है॥सोपुनरुपदार्थजानना॥१॥पुनरपापुनरु
र्थकाचरुपकहतहै॥जोजीवकेक्रोध
मानमायालोभमहमोहपुरुषरागहोस
ग्रहरुअशाजीवपंचथावरजीवकीहिंसाप
रिनिहाचोरकुलीलझूटपरधनहरै॥पर
कोपीडाकरैपापारंभपरग्रहबहुतनारा
खै॥परतईस्त्रीनिजस्त्रीकोसेवैसोपाप
केपरमान॥१॥अशुभभावप्रवर्त्तजीवके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येहे॥तासोधर्मस्तिकाय कहिये॥॥अवअधर्म
स्तिकाय जोलक्षण कहतहे॥॥अवअधर्मद्र
व्य जोहेसोवहुगस्त कोअरुजीव कोस्थिरता क
रतहो॥अनेतअसंखअहेसीहे॥अमरखीक
हेमरतीजिहकी॥अजलकोलिये हेसोअधर्म
स्तिकाय कहिये॥॥अवफेरअकासअस्ति
यकालक्षन कहतहो॥॥अकासजोहेसो
अवस्थानअहेसीहे॥फेरजीवहवेअजीव
हवेअधर्महवेधर्महवेकालहवे॥एसेपाच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैये ॥ ॐ अवधिरहित अजीव द्रव्य कायका कथन

रूपकहते हो ॥ ॐ अवधि जो अजीव जो है पुद्गल सो

रूपी जेहे ॥ वि ना से हे ॥ ना ले वा से रे हो ॥ रे हे ॥ मि

लन लक्षि हे ॥ ॐ नेत प्रहे सी हे ॥ मस्ति वेत हेता

से काय को धरे सो ॥ ॐ जी व द्रव्य काय जा न नो

॥ ॐ अवधि द्रव्य काय कथन हो ॥ ॐ अवधि ने द्र

व्य जो है सो ॥ ॐ से रूपी नि ॐ नेत प्रहे सी हे ॥ जी

व को ॐ पुद्गल को च लवे मे सकाय करे

हो ॥ ॐ मस्ती कमस्ती को धरे हो ॥ पुद्ग को लि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसतत्व नकोवेहोनावतन्मा सुनेइवेहुवेसो
ध्यात्मनत्वं॥सुनेइवेहुवेकहियेसुरत करके
वेहोनतम्प्रात्माकेसाहे॥प्रात्माहेवइंद्रीकु
करएजनीकहे॥इव नकेइवहे नाहेनतमवं
होनमइरसोनिनत्रतः॥होत॥सप्तनत्व
षट्इरवहे॥सहितपहाइषकाय॥इन
कोविश्वपुकासहे॥प्रात्मानत्वस्वाय॥०॥
जीनकाअं॥-जेतत्वजीवप्रजीवप्रा
स्रवप्रोइसवैठानिए॥केइवधनिजैतमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शनप्रकाशके उदरमेंतिष्ठेहे॥ एवंगहनस
तकोधरेहे॥ एसलकोलियेहेतासेकायक्लस
कहियेए॥ एपांचइंद्रियकाप्रवर्तनेहेकहेहे॥ एका
लकोएककरहितेहेवेएकइंद्रीहे॥ तासेका
यक्लेसनाही॥ एसेएपंचक्लेसकायजानकोए
सातनाइसतत्वकोशुद्धनकियोसो॥ इनकोजे
नमनकरेो॥ हेभव्यतुम॥ विश्वप्रकासतत्व
नवेहे॥ विश्वप्रकासकहियेए॥ विश्वजोहेतीन
लोकतामेंतत्वनकोप्रकासहे॥ एसेसत्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हूंनें॥ मानथ गुथनेगुण सत्वरूपें॥ प्र
थें॥ एवंप्राचाजेफेरंप्रेरगुरुमानाकेगु
थनकरतहें॥ सोसुनोहेवंगुरंसाश्रगुरुमा
नितेंहेवंकहियेहेवजोहेसोपंचपरि
मेष्ठमयहे॥ एरहेतासिद्धंप्राचाजेउपाय
हेवसाधियें॥ पाचगुनकरमंडितहें॥ सोहे
वकेगुनजाननो॥ फेरगुरुजोकहियेगुरु
जोहेसोनीनरत्नयेकरयिराजमानहे
श्रीसम्यकदरशनश्रीसम्यकज्ञानश्रीसम्य
चरित्र॥ एतीनगुनगुकेलेनें फेरसास्त्रके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तिमिलेजेसातनत्वपदार्थानीस्त॥जेहवेषट्सो
कहियेजिनवरजीवपुद्गलजीवमानियेे॥धिर
धर्मथ्रोहरुग्रधर्मकालग्राकासेलषट्जा
निये॥पदार्थजीवपुद्गलजीवकाहियेपुन्यपाप
वरवानियेे॥ग्रास्रवसंवरबंधनिर्जलमोक्ष
नवसरधानियेे॥सोजीवथ्रोहरुग्रजीवधर्म
ग्रधर्मग्रलकासहे॥सवतत्वमेजीवथ्रा
सोकोलोकमेपरगासहे॥१०॥चलेगहवं
गुरुसास्वगुनानियेे॥सिद्धगुणसा
ठकरनियेे॥धर्मगुरुहसेनसानव

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ण प्रसन्न की प्रभु सेव की ईषी की त्रेप
न करी है॥ न पचारा इत वार प्राठ मूल गु
न जल गाल नी प्रारा इत मा तेरा विध च
रित्र इस से वे पन भेद कहे है॥ सो चरना न॥
योग कहिये॥ प्रथ चौथा ध्यान जो
गजो गहे॥ ना मे षइ इ म न की चर चा वि
षे षवरन न करी है॥ चौथा ध्यान जोग क
हिये॥ ये से चार वेद के स्वरूप को वरन
न रूप न प्रत्ने ने॥ विसेष कर के॥ कि रीसइ
गु णा सो ना हकारि नि वे सिइ गु णा कहिये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुण चार वेदे है॥ प्रथम ध्यान नाम जोग है॥
नामे त्रैसट्ठ सलाके पुरुषन के गुण वरन
न करे है॥ राज को बल को तप को रूप को सो
भा को साधन को वस्तन करे है॥ सो प्रथमा
नुजोग कहिये॥ प्रथम जोइ वरन ना॥
नुजोग है॥ नामे त्रैलोक को तीन से ते ता
लीस राजधा ना कर कर न रक निजोइ से
ल गाई॥ मध्यलोक ऊर्ध्वलोक को वरजन व
र न न करे है॥ सो करना नुजोग कहिये॥
प्रथमो जो वरना नुजोग है॥ तो मे प्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिये ॥ अघनी जो मुनहंस जो सोहंकी व
हनीहे ॥ करमनासकेकेवलहंसनको
प्रकासहोतभयो ॥ तीनकालसंतभविष्य
वर्तमानकोपदार्थएकसमयमझलकते
भये ॥ अवचोथवीरीजुनजो ॥ गुंत
राईकर्मको नासकेअनंतबलहोतभयो
प्रमानीकरेहमे ॥ अवप्रमानीकेवंहे ॥ ता
सेअविचलहोतभयो ॥ अवपांचमो गु
नसंहमजो ॥ तिनमेनामकरमचर
नकरो ॥ अमलअमूरत सासतेसिद्धपरमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धगुनथ्यानठहेतेसनो॥प्रथमसेम्यक्त
गुणहे॥मोहकरमकेनासकोउपसमहे॥
संम्यक्तसारगुणथ्रवनासोसुषमेमग
नहे॥फेरकेसोहेसिद्धहे॥थ्राथागमनक
रहिनहे॥थ्रटलसुषभोगघंतहे॥१५
वद्यानथ्यानगुनहेसोसुनो॥थ्यानेव
रनीकरमकोनासकेकेवलग्यानप्रघट
होतनयो॥तवतीनलोकदृषैनसोलगत
हे॥ग्यानतेसुद्धसिद्धथ्राथागमनकरहि
नहे॥थ्रटलसुषभोगहे सोग्यानगुनक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमा०

२८॥

॥ प्रवाहनयोगे॥ तथ हनीकरमनासकेस
ज्ञाकर्मेश्वसज्ञाकर्मदोइरहितभयेनिएवा
यशुनजगेसाहश्वलषश्वसरतनेनम
येनिचकेशुनश्वाठमालमेशुधकरे॥श्व
धकारकेदेहकरशुनशुधनकरनले
सेशुनकहेहेसोलुनो॥प्रथमतोइरसनवि
धहे॥श्वाठदोषसेषाईकेश्वरुमइश्वाठस्वइ
श्वनायतमनमस्तनीन॥एपचीसदोषकर
रहितनेोधनासेइरसनीधसुद्धकहीहे॥
निनेपशनहूसरोन॥ इरसनश्पानचीर

२८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

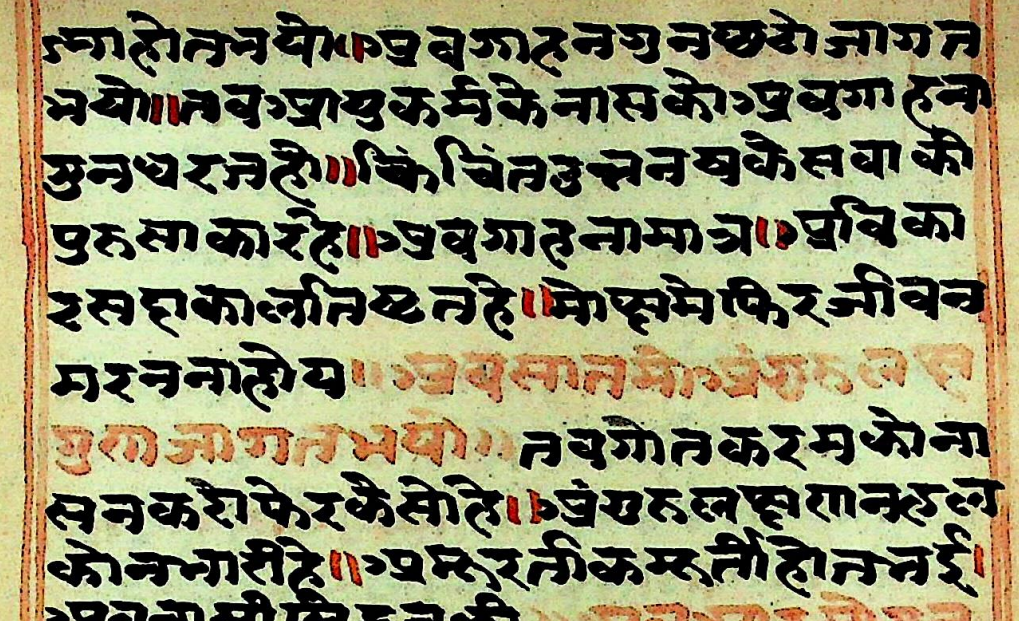

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करे॰ घापघटे॰ घोरन कोघ दावे सोई॰ घाम्रष
णगुन है॥ केरे॰ मानेपा घोगुनपा चमो गु
णहे॥ सोसकलीसागहो॰ घवकेरनपसीगु
न॰ घाठमो कहिनते॥ घनसनपकी॰ घा
हेकेराजापकोपावे॥ घघनीसक घ
मारा करेसो नपसीभाउना कहिये॥ घघ
साधगुण नोमोहनेसुनो॥ स्त्रीवगघ
न॰ घन्नि काई को को ईवे नाघ्रयोजनउप
इवकरे॥ घघवाउपसगे करे जिनकी जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रकरीविराजमानतिरंघछत्रकोधरे॥ए
सेगुरुसर्वभूमित्रयेलमनायेहेतिनकीविनय
सहितनतकरिहये॥ तीनोगुप्तसोनतकरा
पावै॥ प्रतिचारवर्जितपठारीसोजारसी
सकेभेदहैतिनकोउत्तरगुणचौरासीलाखहै
तिनकोपालेतिनकोनामसीसहितकरिहये
प्रभरतगचोथोगुणठेनगहेसुनो॥ प्रा
मेरोजोहेसोसर्वतिनमेकपनकरोहे॥ धर्म
कोमूलदयातेहेग्रहणकरो॥ ज्ञानकेपठकास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सद्गुनकरमंडितहैतिनकी॰प्रसंसाति वंदनाभ
क्तभावसहितकरैसो॰प्रभुहोभक्तकहिये॥ प्र
वु॰प्राचीनजैभक्तकारसोगुनहै॰ जिनवरने
कहेहैसोवनिनाहिंग्रंथसाहितप्यारेहै॰प्र
हसास्त्रसुनैकीरचनाकैकोकरैहै॥परपंच
वारकोप्राचरनकरैहैसो॰प्राचीनजैभक्तक
हिये॥चतुरथभक्तगुनहैरसोहै॰उप
ध्यायजोहैसोसास्त्रकोपढ़ोहै॰ग्रंथका
॰प्रारंभकोपढ़नवेगिपाईवेकोपुन्यहै॰गुन

॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होय सोउपसर्गनिवारेसन्तोषउपजावे॥पेारहेसे
वाचाकरीकरेसोसाधसमाधकीहोये॥पूव
कर्दनसोवेयावछनगुणहे॥सास्वकेविषे
हृसप्रकारकेसाधकहे॥निनकेनननमेरागरे
षपूजवाकोईव्याधदेषवानपकरेपूसक्
लेागयोहेसरीरनकोमासूकपेारहेके
सन्तोउपजावे॥सेवाचाकरीकरेसोवेयावट
नकीहोये॥इतेलोभकेपोरमोह॥पूर
हेनहेवसवमेवोहे॥रजनीकहे॥सध्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकेलोकोकरेहै॥सोमारगप्रभावनाकरि
येहै॥एवंकेरपरवचनकेवलीवैनसत्यगुरा
सोलेकोहसारधर्मजिनवरनेकहोहैसोई
गुनधरनेजेतकेसास्त्ररचनाकरेहै॥तेसब
धनेहैप्रमानेहै॥तिनकोनुमग्रहणकरोहै
सब्यनुमग्रहचारसंगसोप्रीतिराखेजेसोभी
जोहैसोवछासेवडीप्रीतकरेहै॥तेसेतम
साधरननसेप्रीतिराखे॥॥येसेसोना
कारनगुरुकोचिंतवनकरो॥हेभव्यतम
परमगुरुकोकरनेहै॥वचनो केरध

॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करगीरहगंभीरहे॥येसेउपध्यायकीन
कुकरेमावलीहनसोवहुसूत्रमकुकीह
ये॥॥प्रवेग्रासौगुनचौदहसोहेसोनूनो
हैवएजागहमकुस्यध्यायनपहानसंज
मरुसहकर्मनिनप्रनकरे॥सावधानहे
यकेरनकीहनकवहुनाकरेसोवहुन
सूत्रमकुकहिये॥॥प्रवमारगप्रभाप
नाचरणापैहसोहेनारसनो॥॥जपनप
रतनीलसेजमकोपाले॥जिनधर्म
कोप्रघटकरे॥मारगकोचलायेहषेवंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जामे काहू जीव को कडु वो ना लागे ॥ ए सोच
चन बोलिये ॥ जीमे पर मप्रानी सुख मानेसो
मार्इ ब गुन कहिये ॥ [illegible]
कपटना कीजे ॥ गुरु चोरन के समीप
ना रहे ॥ ना सेगन करे ॥ सरल सुभाव राखे ॥
गुरु भोजे पर नाम हो यतां को गुरु जैसो धर्म
कहिये ॥ [illegible] कपटचच
न ना बोलिये ॥ नेसे सद्धर्म कहिये ॥ [illegible]
सो कहन हो इहे मे
सेनो ब राखे ॥ न पकरके सरीर को कसेइ ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेगुणादृशीनस्यानचरनेधर्मेगुणकीहिये॥
धर्मकेलक्षनतोदृशीनकहेहै॥तेसुनो त॥
मउत्तमक्षिमाकहेसोकहियो॥बिनाहेषीषे
नाकारनजेदुखजोबहेतेदुष्यहेमारेहेवाधे
हे॥तिनपेजेसनपुरसहेतेक्षिमाभावकोध
रेहै॥क्रोधकोनहीकरे॥एषेभावयेतेसो उ
त्तमक्षिमाधर्मेकहिये॥मार्दवगुणहेजो
है॥मानजोहेसोगर्वकोमलहे॥नाहेतजो
प्रठकोमलइछामनसपानवचनवोले

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अथ अष्टमोद्देश ॥ सोचत्याग नाम तीसरा कहे
है ॥ सोचार ज्ञान चार संज्ञा को इक भाव सहित
परिग्रहन जो है सो विजलीसमान चंचल ॥ स
नासी है ॥ इसो जोन ज्ञान को धरे सो परिग्रह
मैं कहिये ॥ अथ अकिंचनगुण नाम दोहा ॥ चौथी
समाज को पुरुष गहे ताहे नाजिके सुनपद्
को धारे ॥ तिस से साज के भाव घटावे कोई
चाल की वांछा ना राखे ॥ तीसे अकिंचनथ
मैं कहिये ॥ अथ ब्रह्मचर्यगुण नाम दोहा ॥ ब्र
ह्मचर्य जे को पाले तीन को नव बाड़ राखे ॥ क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनवसकरेनासेसोचगुणकहिये॥संक्र
मगुनगणहै॥सोपाचयावरप्रहणठो
आलकीहपापाले॥पाचइंद्रीठोमनह
नकोवसकरे॥प्रहसंजमरूपीरत्नकोस
म्हालेविषयप्रहपीचोरचहुंहिसकरनहे
तिनसेसेवचेसोसंजमकहिये॥नपगु
नमानसाहे॥नपजोहेसोवारप्रकार
हेसोकेसोहे॥नपकरमहपीसिषरके॥
करवेकोवज्रसमानहे॥नाहेप्रपनीस
कप्रमानकरेसोनपकहिये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोपुमावना ग्रंथ संपूर्ण। एसे ग्राठग्रंथ जाना
जो॥ ग्रथ ग्रष्टानके ग्रंग ग्राठ॥८॥ ग्राठ
हेतेसनो विनजनी जिनएनमः॥ काहे
सेकरो पुघटवरन ग्रक्षरन पुहीरघ्ज्ञु
नकरसुद्ध उच्चारकरे ग्रपाठसिद्धांनको
करे विजनेरे फमानसहितपढेतीसेवि
नजो जिनएनकीर्तिये॥ ग्रथ ग्रर्थसुभ
स्थनमः॥ काहेनेकीर्तिये जेसो सास्त्रको
ग्रर्थसमझनेकेसुद्ध ग्रर्थकरे॥ ग्रहु ग्रर्थ

॥ ३५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीलकोनामचत्यागे॥सानानहिवपुत्रीसम
परईस्त्रीकोजानने॥परनिजईस्त्रीपरई
स्त्रीत्यागकरेसोअहचर्यकहिये॥इसध
र्मकेगुनइसभये॥ब्रचफेरईनचेष्ठेग
प्राठरचनाकरनहोतेसुने॥ब्रष्टमगुण
निरसंकितहे॥चरमेसंसोनारषे॥जिन
देवुनेकहीसोबानीसरहे॥सोनिरसंकि
तगुणकहिये॥निरकांषितगुनइस
भोगकीइछानारषेतपश्चतकरके
फलकोनामागे॥निर्लचैनरहेतिसको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सास्त्रकोपदीनसहेहसोकात्यध्यानहे॥१॥
वफेरउध्यानकात्यहेसोकहेहे॥ सरस
गिरएप्रतारकोतजे॥२प्रहरमनमएप्रात
सतजकेप्रातमजोहेसास्त्रतिनकोपाटक
हेमहापुन्यकोबंधहोतहे॥३प्रहरमनजोहे
सोथिरहोजातहे॥तासेउपध्यानसुमध्या
नएनमःकहिये॥४वफेरयहउपध्या
नसुमध्यानएनमःकाहेसेकाहिये॥५जा
तनकरेचित्तकोवसेभलेपुसतरखे॥६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केसोहे कहेजिसमेफेरकोइसोसंहेहना
उपजेसोअर्थसुभगएनमः कहिये॥सु
वपुरार्थभगपुन्यएोनमकाहेतेकहिये
व्याकरणकेशब्दकोसीहनज्ञानके प्रबंधा
रनाकरे॥प्रगएर्थसुतकोपाठकरेश
ब्दकोअर्थमेंछाहोनारहेसोएाब्दार्थभाव
पुन्यएनमः कहिये॥कालध्यानएनः॥
ध्यएनमः॥ काहेतेकहिये॥प्रातकाल
मध्यानअरुसाइएनीनकालसमाइके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावसहितसोविनयवनकहिये॥ए॥पाठपा
मकेप्रेमजाननो॥अबतेरविध्यधरिअंके
स्वरूपगुणवनकरतहे॥१॥पंचमपंचप्रनोद्ध
तकहितहे॥अहिंसाऽतसतेवद्धचर्ज
परिग्रहपरमानएपाचप्रनोद्धतनीनगु
णाद्धतश्रुरुपाचसमहे॥एतेरविध्यधरि
अजाननो॥अबकीपाचसंम्यक्प्रोरद्ध
हेसोपाछेगुणवनकरेछेमात्मायगुणतेकहि
ये॥सवएकसेंघाठगुनसमस्तजोरकेए

॥३७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नको॰ पुस्तक करे बहुत गुननको संग्रह करे
सीको नाम॰ बहुश्रुत सम्यग्ज्ञान एनमः क
हिये॰ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञान एनमः
कहिये कहिये ॥ साधु गुरु उपाध्याय॰ पुस्तक पु
जा पीछि नके पास जाय कर शास्त्र को पढ़े वि
ना संदेह पाठ शुद्ध कर लेय तब पढ़े ॥ शास्त्र को
शुद्ध ज्ञान सम्यग्ज्ञान एनमः कहिये ॥
पुस्तक पर जो॰ घर तणे हो॰ घर नि रज्जु थ
न के वली प्रज्ञप्त धर्म न की वि नय भक्ति करे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केगुनश्राठसिद्धनकेभये॥श्रवसोलहकारनाभा
वनागुनधर्मईसलक्षणकहईरसनकेश्रंगमिला॥
श्रीमा यकेगुनश्राठसवचौवश्रनभये॥फिरग्यानकेगुन॥
श्राठतेचरित्रतेरहविधलहे॥सम्यक्तकेभेदएकलेपि
॥३८॥ रकाचगुनपाछेकहे॥श्रवजोरकेसवरेगुन नको
समकेइकटधरे॥सवभएएकसेश्राठगुनसंप
मानगुनएरनकरे॥दोहा॥जेकेएकसेश्राठगु
नजेईजेईकरजान॥तिनईकटेजोरकेमानाश्रथी
महान॥१॥गीतिका छंद॥जेनवसानपदार्थनोषं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नकरंडके सहित गुनसस्वरूपकहिये॥ सिद्धनामक
हिये चंद्रमाचरुनसीतलसोमनीकहे॥ फेरकेसोहे॥
गुरुगुप्रसंनगुप्रहिलाकेउपजावनवारेहे॥ एसेएकसे
गुप्राठगुनसंपूरनभये॥ होला॥ परमेष्ठीरत्नत्रेहे॥ए
चारोंवेहोमिस्नाय॥ सोलाकारनामावहे॥ रा॥ब्र
ह्मसिद्धकेस्थाय॥११॥ सोरठा॥ इणिसरागधर्मजो
रहसीनकेपगगुप्राठले॥ इंद्रगुप्राठयानकेचारतेए
विद्यचरित्रकहो॥१२॥ गीतका॥ इसुकेगुरागा
चलेगुरनीनरत्नत्रयलए॥ फेरचारवेहोमिस्नाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमा॰

॥३८॥

ध्यानं चरित्रं॥ साहश्रीमंसुकुमालस्वमुनेः॥
२२॥ षष्ठी॥ षडमायप्पारा कहियेपुनमाप्पा
राहेनेजहीजहीवरनतेा॥ प्रथमसहश्रीनप्र
नमाकेसीहेतेलुनेा॥ पाठमूलगुनपालेसं
यमकेपाठमूलमाेगेपुरुसानविसनिनि
वारेा॥ पुरुपचीसमेलत्याेगेनासेदुसेनपुन
माकहियेा॥ प्रवहुजीअनपुनमाहे॥ पंचप्र
मेाअनतीनउणाअनगहचारसिक्षअन

३८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूरपंचस्कायथे॥ समयुक्तेपरमेष्ठपाचे
तीनरत्नमित्यापते॥ फिरसिद्धकेगुनग्राठचा
रोवेहसोत्वेहकारनोहरीनकेपुंजमित्याय
ग्राठोग्यानकेपुंगग्राठगुनग्रहधमेनोह्
सन्तछनहे॥ तासेकेनिरमलगुना॥ पंचईट्टी
ग्रनोछतनीनगुप्तसमहपाचलगाउना॥
जेगुननकोसबजोरकेसबकोमेरमित्याय
फिरएकसेग्राठगुनकीगुपरचमात्रबना
उनो॥ स्तुत॥ षडमायग्पारतमानपे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पासप्रतिमाकहिये॥सचित्तागप्रतिमापे
चमीहे॥सचित्तवस्तुहरुप्राईप्राइकेस
वस्तुकोत्यागकरे॥प्रहुपासकनीरलेइसो
सचित्तागप्रतिमाकहिये॥प्रतुरागेप्रतिमा
छठमीहे॥जोईनामैघुनपरहरेनोईनाहि
सचित्तहोकेसीलकोपालेते॥मनवचनका
याकरेसोप्रतुरागप्रतिमाकहिये॥प्रव
रुहचनेघोतिमासातिमीहे॥सोत्तुरुतपा
लेते॥प्रहुनोचाठसीलकोपालेतोकोवेडरोका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाराधन पालेसो बहुत पुन्य का कहिये ॥ फ्र
वफेरसमाई कुपुत्र मात्री नीहे ॥ समाई कुली
नो कालकरे ॥ प्रातध्यान सा मन इन सीहत न
हिंचित्त हो के करे सो समाई कपुत्र मा कहि
ये ॥ पोसा पुत्र मा चौथी हे ॥ सो सुनो हो ॥ प्रा
ठे से चउइसे करे महिना की पापा रंभ तजि
के ॥ सो ना पेहरको उपास करे ॥ सकल पौष
कल्प पोडके सुध्यान सास्त्र को पढ़ो ॥
॥ प्रथवा ॥ प्रारंभ को सुनावे न पा ॥ प्रापु सुने सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रु को प्रमाण करे ॥ पुरुष हि मे संतोष राखे रुक वस्त्र रा
खे राग रहित तसे पर गृह प्रमाण प्रतिमा कहिये ॥ ६ न
सुन व्रत साहस मीले ॥ पर को पाप को ठप देश नादेय
के तस रुप को भोजन वचन प्रेम जावे को सो रुसो उपदे
श नादेय सो उन सुन व्रतमा कहिये ॥ जीहा व्रतमा
र्थ करमीले ॥ सोसुनो ॥ सुछंदो के मठ मंडप मे वसे ॥
सहि र के वा हि र चरम मे नहि वसे ॥ पुरुष कलशो ठी
राखे ॥ पुरुष पुत्र कराखे ॥ पुरुषी के कंडुत न राखे ॥ पु
रुष की नही प्रहार लेय ॥ सोग्यारमी व्रतमा कहिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मकोवत्सयहोयसोगरिष्टनोजनकरे॥१॥घृतरस
भोजनकरेनहि॥२॥सिंगारकरेनहि॥३॥स्त्रीकीसे
जपेवसेनहि॥४॥एकलोवतएवेनहि॥५॥पुत्रकेलो
स्त्रीकेसंगरहेनहि॥६॥एगभावकरस्त्रीकेवचन
सुनेनहि॥७॥एगभावकरस्त्रीकोरूपनिरखेन
हि॥८॥मनमेकथाकरेनहि॥९॥एनोवाटवमूच
जैकीकहियेसोटमूचजैप्रतमाकहिये॥अबरेन
प्रतमाआठमीहे॥सोपापारंभनोजेकेछतकोधा
रेसोआरंभत्यागप्रतमाकहिये॥एचकेरपरग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसउ न कहिये॥ पुन्न पैं इती जो उत्तहे॥ जामे
॥ पुण्णो सारथ्थो होय॥ पापरूप होय सो॥ प्रनर्थ दंड
कहिये॥ येती नगुणा उत जानने॥ पैसा उत
चारहे॥ तेसनो॥ प्रथम समाई कासिष्य उतहे॥ प्रा
तमध्यान सो मनए कानए कठोर वैचारके ध्या
न करे॥ पुरुतरौद्र ध्यान नाराखे सोई समाई
कासिष्या उत कहिये॥ दूसरो उपासासिष्या उत
कहिनलो॥ उपास जोहे सो सो रापहिर को करे॥
धर्मध्यान मेरहे॥ हे॰ पाठे दो चौ इसे करे सो उपा

॥८२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एसीग्यारा इन मा पाने ॥ केइ तत्व सेवे तत्वा नपेषं
कहिये ॥ नत्व जो हे पइ हा थी ति न को इ हेा ॥ चउ ना ॥
इन्हा इ न सी त्व कहिये इ इ न जो वरा ने सु नो ॥ प्रथम
गुन इ तनी न हे सो इ सो हि सा की मर जा इ कर ने य ॥
मर जा इ इ ए नी हे ॥ मर ण को जा न के वा हि र पा ऊ
नो हे पइ जो ए नो घट मे प्रा ण र हे नो ए नो मर जा इ भं जना
क रे नहि सो इ व्य व न क हे न हे ॥ य न पुर स ता ग ऊ
छे त्र हे स प्रा हि हे के ज हा लो ग म न की जे ॥ न हा ए नो
मर जा इ कर ने य ॥ फे र उ प रो न उ न्ना के नहि सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ पुनरपि कंपाकरसवजीवनपेसमभावराखे॥
॥ पुरुहानाकेमानशुनहे॥॥ पुरुनयधामीले
करहानहेयसो॥ पुनीनसंविनागसिष्याद
नकहिये॥॥ पुंनहासलेहनासारःपुंनकाल
मेसलेषनमरनकरेसमाधसेप्रानतजे।
समभावराषेसो॥ पुनेहासलेनोमरनकहि॥
ये॥ एचारसिष्याद्यतजाननो॥ पुवकेर
पंच॥ पुनोद्यतकहनहो॥॥ तेसुनो॥॥ पुहिंसा
द्यतपुथमहे॥ पाचमोथावर॥ पुरुषदोत्रास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिक्षा व्रत कहिये ॥ एकवार भोग मे ॥ प्रावे सो
भोग कोभोगे ॥ प्रनेकवार भोगे सो उप
भोग है ॥ प्रष्ट मा उपभोग को हेय न को प
रमान राखे सो सिक्षा व्रत कहिये ॥ प्रतिथ सं
विभाग तीसरो सिक्षा व्रत ॥ विना दुत्ता एती
न प्रकार के सुपात्र प्रावे ॥ [illegible] ॥ घरे उ त्तम म
ध्यम जघन एतीन दानहै ना ॥ प्रतुरागन
क्रम करके ॥ प्रति हर्ष नम्रभीव ॥ प्रप्रवे ध
र ॥ प्रावे तीन को दान ॥ पुत्र मात्र हेय ॥ उत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक ।

॥७५॥ वे

॥७५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीइया करेजिसमेकोईजीवविरोधो नाजाय
॥प्रहिंसा व्रत कहिये॥प्रव्रत व्रतदूसरो
कहत हे॥परईनिंदा प्रकाशकोनजो प्रकट
कूट वचनमत कहे॥कपटरहितहितका
रीमितमा फीवचनबोलिये॥तासेव्रत व्रत
कहिये॥॥प्रवसत्यव्रततीसरोहे॥परईड
रीपरीचिनाहूईवस्तकोनलेय मनसेकाया
सेपरईवस्तकोत्यागनकरे॥सोचाजे व्रत
कहिये॥प्रवव्रतचाजेव्रत्रीपोहेसोकह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समो स्वाध्यायतपकहतेहो॥ सास्त्रस्त्र
कोपाठकरे॥ ग्रथवाग्रेरनकोपढावे ग्रथ
वासुनावेग्रनकोचिंतवनकरे॥ वाग्भाव
नाकोभावे॥ ग्रनुप्रेक्षनकोग्रपहेसहेयचर
चाचिंतवन करे॥ तासेस्वाध्यायतपकहिये
कायउत्सर्गतपग्यारमोहे॥ सोकहतहो॥
कायउत्सर्गतपग्राकरीनेसहितकरे॥
ग्रथवापक्षासंवत्सरीनकरीनरविकल्प
तोयतपकोकरे सोकायउत्सर्गतपकहिये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प॰ पु॰ ६ मोहे॥ सोहशीलध्यानचरित्रकरसं
जुक्तसोजेमुनकोकरेप्रकर्मनकोजीते
सोनिनकीचिनयनकरेसोविनयतपका
हेये॥ऐसाहतनपनयमोहेनेसुनो॥प
नजोहेसोरोगकरप॰पुण्याभ्याधकरप॰पु॰
जराकरमृत्यनहे॥नन॰पु॰नपकरकेकी
नहोगईहेहेलिजनकीएसेमुनकोप्रा॰पु॰
क॰प्रोखइकेसनाउपजावे॥पुल्लनकरो
सोवाचाकरोसोऐपहतकहिये॥॰पु॰६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिज केतपहे॥ पुत्रके प्रायोतर केतपक
हेतहो॥ प्रायः श्चित्ततपकहहे॥ सोअतको
करेसोहेवगुरुकीसाखहेकेअतकोतेप
फेरअतकोकरेजोकदाचित्अतसेच
लजाय॥ पुनिचारलगेसोगुरुकेपासजा
यकेप्रापसवगुनप्रोगुनसबप्रकासक
रकेकहे॥ फेरतवगुरुजोहेसोदंडदेयसो
करे॥ फेरअतसोसावधानहोकरकरे
सोप्रायश्चित्ततपकाहिये॥ विनयअतत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग कहिये॥ विवक्त सिज्यासन तप पांचमो
है॥ ब्रह्मचर्य के कोई न इस्त्री को संग स्या
गे पुरुष वस्त्र को करे गुप्त मस्तान मे वस के
ध्यान को करे॥ सो ए विवक्त सिज्यासन त
प कहिये॥ काया क्लेस तप छटो है॥ देह
जो है सो इस की रक्षा न है॥ सो देह सो नेह त
जे॥ काया को कस ध्यान को करे॥ नग्न छी
ग करे॥ पांचई इंद्री छटो मन को वस क
रे॥ सो काया क्लेस तप कहिये॥ एछेवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीना०

॥४८॥

रचारदानकोफलकेसोहेतेसनो॥ पुण्य
सुग्यानदानहे॥ पुण्यपहेप्रोरनकोपढवे
॥पढसास्त्रकोलिखाकेधरमारामहसुख
सनकोहेय॥ पुण्यवा॥ पमोहनाकरे॥ जो
कोईग्यानदानहेयतिसकीवडाईकरे॥ पुण्य
पहसंसहितदानहेय॥ इसग्यानदानके
योगसेभावभावसेसुखभोगेहे॥ पुण्य
इसग्यानदानकेजोगसेमतिश्रुतअवधि
पर्यग्यानतोसुपसिद्धहीओ पजेजेसेरवे

॥४८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥प्रथमे रौद्रध्यान तणा प्रकार भेद ते तेहनु ॥ध
र्मध्यान केपाये चार ॥प्रथमा विचय पाय वि
चय संस्थान विचय विपाक विचय धर्मध्यान
केपाए जाननो ॥ चपना ॥ सुक्लध्यानीचे
तव तम थे ॥ केलो ते सुक्लध्यान सर्व उत्कृ
ष्ट सुख को हे नलाहे ते ॥ ना से ध्यान सव
मे सार ते ॥ ना से सुभध्यान को हे थे ॥ ए छे
॥ प्रथम ते र के तणा जाननो ॥ ये से चार ध्यान
पृ को पाम्ये ॥ मन वचन का या से ॥ ॥ प्रथमे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त सुद्धं कहिये ॥ पचीस मे लग्या गो ती
से सम्यक्त सुद्धं कहिये ॥ ग्यानं चरित्रं ॥ ग्यानं
चरित्रं कहिये ॥ ग्यान सहित चरित्र को पा
लेणि नको नाम सम्यक्त कहिये ॥ साद्दीने
सुद्धम ॥ चरित्रं ॥ साद्दसनं सुद्धं कहिये दु
सैन सुद्धं नजा से कहिये ॥ एक पचीस मे ज
ग्न सम्यक्त को त्याग ॥ परुतत्व नकी पद्दिचा
न होय ॥ साचीता को नाम सद्दसन सुद्धं क
हिये सो सम्यक्त कहीजे ॥ दोहा ॥ ग्रव त्रेप

॥५०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुद्गलनेवसतेमेजोहोयतोपुनपुद्गलक
हियेपरजीवकोसत्ताहोयसोकहियेइ
सपुनध्यानकेजोगसेइहपरभवपर
चक्रवर्तकामहेवनरानबलनहपुद्गली
पुनरानघाहिदेकेपुनेकरलिछीप
हवीमिलेपुनेकसुखभोगेनिरनेर
हेपरंपरयमोक्षसुखपावेपुनध्यान
केजोगसेएसेचारध्यानकोचिंतवनकरे
नयनुप॥केरसेमकेसुद्रध्यानेचहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहिये॥ अरहीसाधजोहेप्राचारमक्रियक
रजुक्तिनकीमहिमावडाईकरे॥सोगुरहि
लक्षनकहिये॥अरहंतसमलक्षन
हो॥इयासाहेतरानहेयसवसोक्षमापरना
मरखे॥सवहरवसमरखे॥सोउपसमलक्ष
णकहिये॥नवधाभक्तिजेनेंद्रकीकरे॥गुरुन
सेसमप्रायेकेकहीहे॥सोप्राप्तकरे॥प्ररुषो
रकोउपहेसहेयसमकीलक्षणकहिये॥व
॥सोलक्षनेकहिये॥जतीप्ररुसाधुप्रा
चीअरहीरोगकरुसोहेतनजिनकोजिन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नकिरियाकहेज्यारापुतमाचार॥इतनप
जुगवाराकहेतनहेचारप्रकार॥सम्य
कुहीनज्यानजुतस्तगुनग्राठवरषा
नसेमाइकजलगालनीसवमिलत्रेप
नजानए३॥पद्धडीछंद॥श्रीवगप्रतमा
ज्याराकहेतत्वनकेगुनहूहैमधेतपा
लेवाराइतसीलधारपतषवाराकरहेहा
नचार॥सम्यक्ज्यानचीहेअसुद्ध॥इसे
नमलवर्जितहेप्रासुद्ध॥जलगालनीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुण॥ ज्ञानेमयंसद्धुथहेतचेत॥ ज्ञानेम
येकहियेज्ञानमयजोहेगुनतिनकोहहेमेथा
रेतनमनकरेहेनअतुमचपना॥तेसद्धु
द्धीसोध्यासमतसे॥तेसद्धिद्धीकहियेसुद्ध
जोहेहृदजिनकीतिनकोसुद्धिद्धीनिरम
लभईज्ञात्मानुभविचार॥गीतकाछंद॥सं
यमकेगुनेज्ञाठनिमंजमूलगुनजेपात्र
हे॥तेसुद्धिनमंत्रज्ञाठगुनहेतिनेकहेहेचार
हे॥ज्ञानगुणमयचारकरकीतिनतेसुद्ध
विचारीत॥तेसुद्धिद्धीभईहेतिनकीसुद्धज्ञा

५३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोदेखकेपासकप्रोषहदेय ग्रहसेवाचाकरी
केरेग्रहुदीजीवनरयाकरे सोबोलन्याक
हिये॥ अनुकंपालक्षनकहनहे॥ पंचयाव
रग्रवछरोग्रासकीदयाकरेग्रापसरीरवाजी
वकोईविरोध्योनाजाय सोअनुकंपाकहिये
रुमरुनग्राठीलनकोपालेकेसोहुरुलजोवि
सुद्धकहियेनिरमलहे॥ सुद्धमयेनिमेल
चारएहे॥ सुद्धमयेकहियेसुद्धजोहेसम्म
कुकेगुनानिर्मलसोइहेमेथारो केरकेसोहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बसंख्याइके कहिये चपना ॥ महमानसुक्रं ॥
महमानसुक्रंकहिये महप्राठहेतेसुनो ॥ जा
नमह ॥ नोमसह २ कुवमह ३ कुरुपमह ४
नपमह ५ वनमह ६ विघामह ७ सिरए
रीमह ८ जेप्राठमहको मागे सठचियाक
हिये सठनीनहे हेवसठ ॥ सुकसठ २ पा
वंठसठ ३ एनीनसठ कहिये मिथ्यामाया
नीहुं मिथ्याकहिये सठी सामग्री प्रहमाया
कहिये इंगावाजी ताके भावको त्याग ॥ ५ ॥
स्यानेषट्कमैतपंचवीसं ॥ प्रस्याने कहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधारिये ॥२८॥ दो ता ॥ येसे गुनत्रे पनक्रिये
तिनके सुद्धकरधार ॥ तिनकी सुद्धिदीनिर्मल
भई सोध्यात्मातत्वविचार ॥ सूत्र ॥ सेखाप
रेषेंमहमानसुद्धकाम ॥ सूत्रेत्रियेनिष्यासयान
रिष्टी ॥ घ्रत्यानेषट्कर्मत्रेपचवीसे ॥ तिन्
तस्यन्यानंनिर्मलकर्मेसुद्धे ॥ २५ ॥ पूर्व ॥ से
खाप्रेषेंकहिये सेखाईके दोषघ्राठहेतेस
ोसेष्या ॥ क्रोधया ॥ हरषोछया ३ सूद्
रिष्ट ४ पएयेदोषनासणकरे ५ ॥ प्रथिरता ६
कंषत्रहिता ॥ ७ ॥ प्रभावनारहित ८ ए घ्राठदो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवर सो निवारन कीजिये ॥ पचीसदोषविव
र्जितकरके सम्यक्त सुद्ध गहि लीजिये ॥ सुनेत्र ॥
सुद्धप्रकास सो ध्यात्मतत्व ॥ समजसेक
ल्पविकल्पमुक्त ॥ रत्नत्रयसेसंकलितविम
लरूप ॥ तत्वपिलंडवहमकसुक्त ॥ ५ ॥ छ
पै ॥ एवंभोगुरुपरमगुरुकृपासागरहित
उपदेसकरभव्यनकोनिमित्तकरआत्माके
स्वरूपकोवरतनकरेसोके सोहे ॥ सुद्धप्र
कासकहिये ॥ सुद्धहैप्रकास आत्माकोजाको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येषट्‌ अनायतन नहेते सुनो कुगुर कुदेव
कुधर्म ए कुगुर कहेये कुधर्म ए षट्‌
अनायतन कहिये येसे पचीस मेलसागे तो
से सम्यक्त दृढ़ी करिये ॥ दोहा ॥ पाठ दोष से
वाय के मद जे आठ विचार षट्‌ अनायतन
न मद त्रिय एपचीस नवीर ॥ ७ ॥ तीन का
छंद ॥ से काय दोष निवार के मद आठ को सा
गे से हि ॥ फिर मूढ़ी नीव वजे करी मन ध्यान
दूरी निवारी हि ॥ अन आयतन षट्‌ कहीजि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्मलगुणकरसज्ञकहे॥चिद्रूपकहिये
तीनलोकविषेव्याप्तहेरूपजिनको॥तीन
लोकको सिंगारआत्मास्वयंसिद्धअविना
सीनिरकारहे॥ताहेभव्यतुमदर्सो॥फेर
तत्वार्थसाहुकहिये॥तत्वजोहेपदार्थ॥
तिनकीसरधाकहियेरुचप्रतीतहेभव्य
तुमकरो॥बहुमलकलेशकहिये॥बहुतबडी
जलकसे॥जीवादिककीपहिचानकरेत
वसम्यक्प्राप्तहोयतबआत्मास्वरूपद
सै॥सोसम्यक्दृष्टीकहिये॥देहा॥आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फेरकेसोहे ग्रात्माकेवलदर्सनकेवलग्यान
करविराजमानहे ॥ सुद्धकहियेनिर्मलहे ग्रात्मा
जाकी ॥ फेरकेसोहे समस्तसंकल्पविकल्प
करसुद्धकरकेरहितरुसोनिरविकल्पहे
चपना ॥ फेरकेसोहे ॥ ग्रात्मात्रयंतेकृत
विश्वरुपं ॥ रत्नत्रयकहियेतीनरत्नश्रीसे
प्यकरहीनंग्यानचरित्रकरग्रलंकृतक
हियेसंजुक्तहे ॥ फेरकेसोहे ॥ सत्यरुपंकहि
येसत्यिनामजोचंद्रमाहेसोग्रतिसीतलहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर रहित होत भये ॥ प्रथम ही सौ सुख साता
नेमी जिन भये ॥ दोहा ॥ धर्म ध्यान गुण गावा
नजे रहे नित नके दोष ॥ इम नेहे नि जातम
को तेपावत नहे मोक्ष ॥ २ ॥ वरवीर छंद ॥ ध
र्म ध्यान मे लीन भये हे ॥ प्रात्मा के गुण चि
न्तवत हे ॥ जिन की रिद्ध सुद्ध भई नि मेष
तिन के दुख सब दूर भये हे ॥ सेवत नत
वन को इंद्र ते प्रात्मा ध्यान निहार ल येहे ॥
केवल ज्ञान उपाई तीछिन कर्म नास के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्मा सुद्ध प्रकास हे सेकल्पि कल्प नाहि ॥ ६
से न ग्यान चरित्र ज न जिन हे व कहो न रख
नाहि ॥ चोपाई ॥ परम प्रकास जोति प्रति
जाना ॥ सुद्ध प्रात्मा तत्व पहिचाना निरवि
कल्प कल्प नहि नास ॥ रत्न त्रय मंडित पर
कास ॥ तीन लोक व्यापक हे रूपा कहो प्रात्मा
न बे सरूपा ॥ श्रीगुरु कहे सुनो भव जीवा
ना की सरधा करो सही वा ॥ ५ ॥ सूत्र ॥ जेथ
मैत्री ना शुन चेतनि त्वं ॥ तेहु व्यती ना जि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रम लहि सकोतभये सो सम्यक्दृष्टि क
हिये ॥ पत्र चपला फेर माला गुन कहि
ये माला के गुन के सेहे सुंदर सोभनीक
है ॥ जो सम्यक्दृष्टी नित कोइ है कंठसेमा
ला के गुन रूप नाम सोभनभये फेरत
त्वार्थ सार्द्ध चकरोति नित्य ॥ तत्वार्थ सार्द्ध
कहिये ॥ तत्व जोहे पदार्थ ता की सरधा
जो रुचपतीत ता को करे ॥ नित्य कहिये
सदाकाल सद्द्रव्य परद्रव्य को जानो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोछगएहे ॥६॥ सूत्र ॥ जेसम्यग्दृष्टी सं
म्यक्त सहित ॥ मात्मागुनं कोठहइयहु लेने
नत्वार्थसार्द्धच कोनिनिर्वं ॥ संसारमुक्ते
सचसुखबीजे ॥ प्रर्थ ॥ इहश्रीगुरुभव्य
जीवन कोउपदेसदेनहे हेभव्यतमसुनो
जेसम्यग्दृष्टीकहियेसुद्धजोहे ॥ प्रात्मा काको
स्वरूपकेसोहे ॥ सुद्धनामनिर्मलकर्मरूपी
रंजननकरवर्जितनाकोनामस्वरूपके
सोहे दृष्टीनारसीहेनिनकोसुद्धनामनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रकेसोहे ॥ प्रात्माके ताके गुनहूरसनस्मा
नरूपीजोरकेतेकेसेहे निमेलहे ॥ प्रसं
नसारहे मेकहवेकोसामनहीहे ॥ च
पना ॥ केरसेषगुपनंतनमगुन प्रनंत
हेतासे हेजगवान तमारेगुननो प्रप
रंपारहे मनेधरचारग्यानकथारी
प्रहुसरस्वतीतीनपारनहीपायो ॥ सो
तुमारी बुद्धतो बहुतनछहे तासेमेसं
सेपमात्रथोरेसोगुनकहतहे ॥ चप

६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मा का स्वरूप को चिंतवन करो हे भव्य
तुम फेर संसार जो है सो दुख की खान है
फेर के सो है संसार समुद्र सरी सो अत्यं
त गंभीर है ना से जो संभ्य कीए ही संसा
र भोग से विरक्त हो के है गंधर रूद्र को
ध्यान कर आत्मा के स्वरूप को ध्यान
कर के कर्म नाश को के वल ज्ञान
उपजे के मोक्ष को जाना भये सो अवना
सी सुख में मग्न हो ना भये आवागमन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसेसहोयहे॥येसो॥श्रीजिनेवनप्र
रूपनाकियोहे॥सोहेभव्यनुमजाननो
होला॥ग्यानमईगुनमालहेरुचसो॥
निमेलसार॥संक्षेपहिमेनेकहीतु
मगुनग्रपरंपार॥२८॥घेरवीरछं
द॥ग्यानरूपगुनमालग्रनूपमसो
निर्मग्रनसोहे॥संक्षेपमालमेगुथ
नकरनहेगुनग्रनेकहिये॥रत्नती
नग्रनेंकनसमगुनसीनग्रजो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ना॥फेरकेसोहेमालारत्नत्रयेकहि
येतीनरत्नत्रयकरइरसनग्यानप्र
रुचरित्रकरइरसनग्यानप्ररुचीर
त्रकरलेरुतकहियेसोलहोहे॥फे
रकेसोहेमालासग्यहुपकहियेसीस
नामकहियेचंइमानासरीसेहेप्रति
सीतलगुणजिनके॥तत्वार्थसाह्र॥
कहिये॥तत्वजोहेपदार्थतिनकीस
रधाजोहेरुचप्रतीतताकोप्रनमप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमंडनहेव ॥ प्रहहेयोगनामनकपुरुषघीजे
कालीवरण ॥ पुरुषावरणनीखतनिरजं
च ॥ एसेचौसंगकरसंहितश्रीमहावी
रहेयसोहतनये ॥ पुरुषोनानिरषत
भई गनथरचजोहेसोवानीकोप्रेत
नये ॥ तासेमेरुजाप्रेनकसाथग
निमस्कारकरकेफेरगोतमगनथ
॥ प्रारहेकेसबकोजथाजोगसेनिम ॥
स्कारकरकेमनथनकेकोठामेंनिष्ट
नये ॥ तासमेंपमाहकरतकरतेम

॥६३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि॥ नत्व नकी सरथा करो नव जनाजिनव
रु॥ प्रापक होहे॥ सूत्र॥ श्रीनिधा प्रणंति
श्रीवीरनाथे॥ मरुस्थिये मागतिनेय
क्रो॥ चरनेरुरुं गंधर्वजय्य॥ नरन
हे चक्रविश्वाधरेत्वे॥ ग्रंथ॥ ग्रवश्री
गुरुरयासागरपरमउपगारीनव्यजि
नकोउपरेसरेनमये हेनयतनसुनो
रिरुचिन्नलोके॥ ग्रवश्रीमहावीरस्वामी
केवलग्यानकरमंडितसमोसरनमे
विराजमानतहा चारोसभा चोसंघक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्नीमा०

॥६८॥

नस्यसंनसनेहकेनरेणजाणेनक
पायेनाकरनमये॥चपना॥केरथ
रनेइइंइगंधर्वेछजे॥घरनेइकहि
ये॥पातालवासीदेवनेमालमागन
मये॥तेनाधनमकोमालदेप्रो॥के
रइंइजोतेस्वर्गेवासीदेवनेइछयजो
इकेमालमालमागनमये॥चपना
गंधर्वदेवकहियेगंधर्वजातकेदे
व॥प्रजपकहियेजपदेव॥प्रक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये श्रेणीया पि छांतिश्री वीरनाथ श्रे
णी यपि छांतिकीहुये एजाश्रेनकश्री
महावीरस्वामी सेंविनयसहितनम्रके
वंनहोयएणनमये मात्राश्रेयंमागे
नचेहचक्रं मात्राश्रीयकीहुयेमात्र
केसीहे श्रियंकीहुयेसोभनीकहे न
व्यजीवकेचितकेहरनहारीहे फेरके
सीहेमात्राकेमनकेरमाहनहारीहे ए
सीमात्रकल्यानकारीहे एनाघहन
कोहे श्रो हमपरप्रसन्नहो श्रो यामा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्रानंदपदैकमागतभये ॥ दोहा ॥
समोसरनमलवीरकेअनकप्रम्
कएय ॥ इहविधिकलवयाकहेमानहे
श्रीजिनराय ॥ २९ ॥ वरवीरछंद ॥ म
हावीरजिनराजपदप्रभुजीसमोसरन
सुनसोहे ॥ बारसभाजुरीतहासंहर
हेखनसबजगमोहे ॥ राजाश्रेनकप्र
जंकरीहे ॥ प्रभुहमपरकृपाकीजे ॥ म
नरुपीमाजा श्रुतिनिमलसोनमहम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

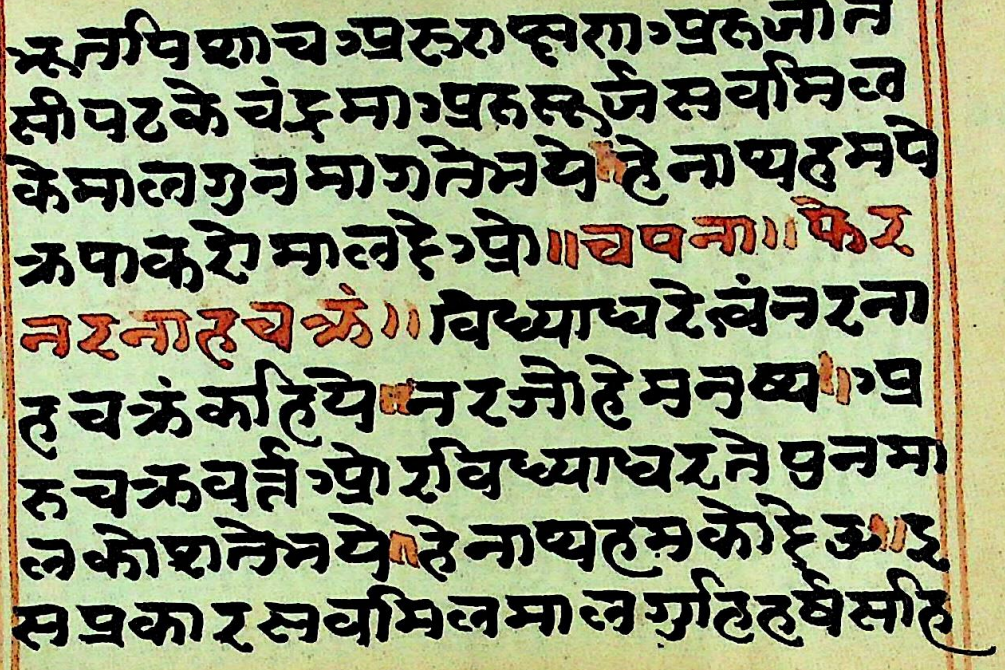

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १ पुरुषो ॥ पुरुषकेरचारसेंगमिलेघोजिक
रनभये ॥ हेनाथहमकोमालेहुंप्रो ॥ किंहु
करलंकाहिये ॥ कोउकहनभये ॥ हेनाथह
मबहुतरत्नसुरचैहमकोमाहेंप्रो ॥ पु
रुकोउकहनभये ॥ हेहेवुहमबहुतरत्न
चीकरेंगे ॥ पुरुबहुतनमेंचकरेंगे ॥ पुरुषे
नेकजुगीतसेलावुतभये ॥ हमहूंमकों
मालेहुंप्रो ॥ किंनिकरा जा वुनवासलेवें
पुरुकोउकहनभये ॥ हेस्वामीहमपेहपा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोडीजे ॥ इंद्र ॥ रथरनेंद्र जोमाजे ॥
श्रीजिनवरके ॥ प्रागे ॥ शंखवेजष्टोत्त
रशयजोरकेमास्त्रवहुनाविधमागे ॥ च
क्रवर्तेनरविध्याधरहुनसवहीमा ॥
लाचाही ॥ चारसंगमिल ॥ प्रजिकरन
हेवहुविध्यप्रभाकरणही ॥ २६ ॥ किंहि ॥
रत्नवहुवेश्वनेनें ॥ किंधनेप्रनेतें
वहुवेहुजनें ॥ किंतिकरणजावनवे
स्तनेतें ॥ किंनवेनवेवें वहुवेप्रनेतें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोइनहे कोई धनखरचाय ॥ इहविधमा
नजो मागहिं बहुविधपुन्यकराय ॥२०॥
वरवीरछंद ॥ चारसंगमिलसहितविं
राजनसमोसरनकेमाही ॥ कोईकहेरत्न
हमखरचे बहुविधधनकेकाहि ॥ धन
पुत्रनेनहमखरचकरेंगेराजकोइधनजा
ई ॥ कोईकहेनपुत्याकारहिबहुविधमे
षवनाई ॥२०॥ मूल ॥ श्रीवीरनाथेजा
कलसहु ॥ सनमनराजामालाजुना

॥ ६७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहोय॥ किंनेकरणजाकहिये हेमहाए
ज्ञ॰पुहुमपुहवीछाडकेहिंगवरलोकेव
नमेवासकरेजो॥नमहमकोमालहे॰प्रो
किनवेतनवेलवहुवे॰ब्रह्मनंत॥ किनवे
नवेतंकहिये॥कोउकहनजयेहेस्वा
मीगरहमनुनपधरेजो॥॰प्रहुवनमेव
सेजो॥नपस्याकरेजो॥नमहमकोमालहे
॰प्रो॥याप्रकारवहुतजकमिलायोहेकेस
वमिलभ्रांजिकरनभये॥सोहकोईरल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा मानगुनार्थे ॥ हे राजन हे नव्यनम
निकसंसारीहे ॥ स्नेजोग्यकियासोतो को
उत्तरमेसंक्षेपकरकहनहो ॥ किंरत्नकिं
ग्रर्थकिंराजनाथे ॥ किंरत्नकीहथे हेन
राधिपतिबहुनरवरचे ॥ कहाग्रहहे ॥
रनराजपृथ्वीपायेकहा ॥ ग्रहस्वाग ॥
कहा ॥ कपुण्यर्थनही निपजे ॥ ग्रहकिंत
वेतवेत्येनतमाजीहथे ॥ किंतवेतवेत्वे
कीहथे हेराजनतपकेकरेकहा ॥ ग्रहहि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थ॥ किंरत्नकिंप्रथ्वेकिंराजनथ्थे॥किं
नथ्थेतँथ्थंवननात्तिष्ठ॥२७॥प्रथ्थे॥
श्रीवीरनाथ्थेउत्तैतनसुद्धं श्रीवीरनाथ्थक॥
हिथ्थे॥प्रथ्थश्रीमहावीरस्वामीसमोसरन
मेथिराजमानउपदेसकोहेतनथ्थे॥नास
मेराजाश्रेनकको॥प्राहुहेकेइहाहिकहे
वे॥प्रुछविथ्याधरमनुथ्यसवनेप्रस्नक
रोहेनाथ्थ॥हमकोसाखहीजे॥नाकोउत्त
रश्रीमहावीरस्वामीहेतनथ्थे॥सुनश्रेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवीरनाथमहाराजपुत्रजीसारसु
द्धउपदेसकहतहै॥सुनोरायश्रेनकत
सचितहैमालोकगनग्रथवहुतहै॥
कहारलेलक्ष्मीकेसरचै॥राजत्याग
कछुकाजसरतहै॥कहाहोयतपकरे
ज्ञानविनयेसेनहोयनमालीमलत
है॥२१॥इलो॥किंरत्नकाजेबहुधे
नुनेतं॥किंग्रथैग्रथैनीहकोप
काजे॥किंराजचक्रेकिमकामहृ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जेवरमुद्राकेधरैकहा॥यातेकलेकहा॥
नासेंप्रात्माकेस्वरूपकोनहिजान्नेद्रव्य
लीजीकहिये॥नासेनपकरैकहासेद्रव्य
ईसोसवव्यर्थहे॥नासेनेभयेसेमा
त्रनहीमिलेजोजुवरमनवीरस्वामी
कहनेसेयेसोभव्यतुमजानो॥इन
वीरनाथजिनराजजीकहनेसेस
नराय॥नपकरैरत्नेषरचेकहाइहीवि
धमात्तनपाय॥२॥वरवीरस्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाकेपायेकहा॥ग्रहषरचेकहा॥इसमे
कहासिद्धभई॥किंराजचक्रंकिंकामरू
पं किंराजचक्रंकहियेराजपृथ्वीपा
येकहा॥ग्रहचक्रवर्तिपृथ्वीपायेक
हा॥ग्रहकामपृथ्वीपायेकहा॥ग्रहरू
पसुहृदस्वरूपपायेकहा॥किंतवेतवे
त्वंविनसुद्धदृष्टं॥किंतवेतवेत्वंकहि
येनैतन्यतपकेरकहाविनाग्यानस
रीरकोदेहीतोकहा॥नातसुद्धदृष्टत्व
येविनासवस्तुकाहे॥येसेसाक्षनहोसि

७०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

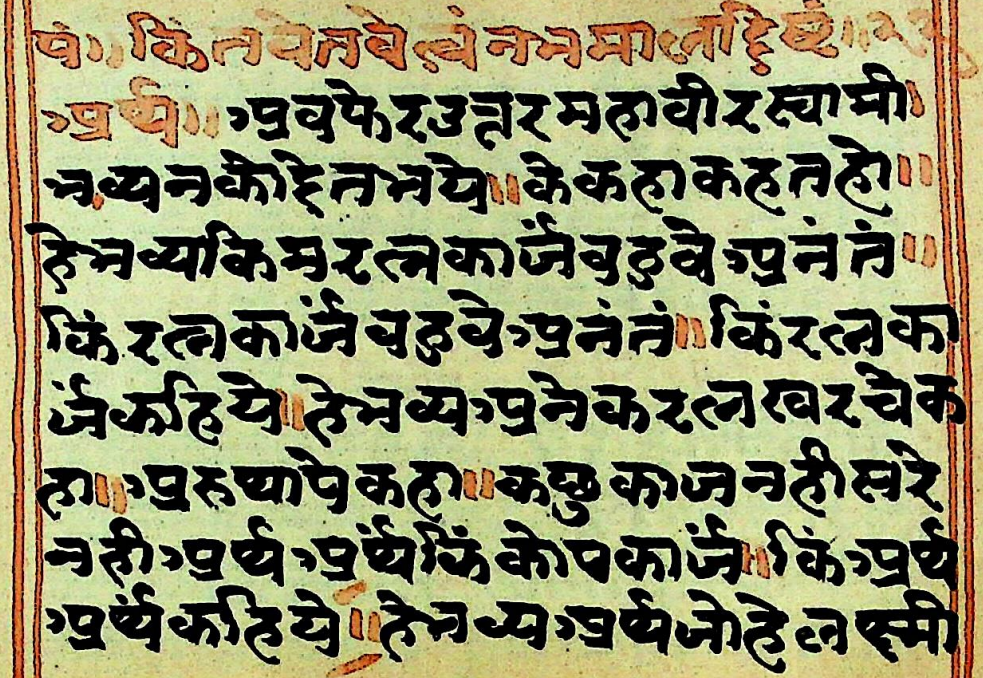

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंकहेये॥प्रनेकजनकीमनभावनभये॥
मालनहिंकोयतिजिनेंद्र॥तबजि
नेंद्रभगवानकहेतेभये॥हेभव्यऐसे
मालनहिंपापहोससकेहे॥सद्भावविनास
वरचयाहे॥नासेहेभव्यसद्भावकोकरो
प्रभुप्रनामनकोथिरकरो॥येसोउपदेस
देतभये॥होल॥इंद्रादिकसबदेवसब॥
बहुविध्यजगतमिलाय॥नेवीमालना॥
पावतो॥कहतभयेजिनराय॥२३॥पहु

क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नसकेते ॥ येसो पुनिउ न्नरमहावीरस्वामी
हैनभये ॥२२॥ दोहा ॥ रत्नचक्रषट्खीत
जेकहाहोयसुनरय ॥ सुद्धिहहोयेवि
नासवेग्रकारनजाय ॥ चरकीरछंद ॥ र
त्नग्रनंतबहुनविध्यरचे ॥ कहाहोइ
हैभाई ॥ नसमीत्यागकाजनासरहे ॥ स
नग्रेनकमनत्याई ॥ रजचक्रवनकाम
हैषट्खीमेकोनवहाई ॥ तपजोकरेक
हाजाहिहसुधविनसवेग्रकारषजाई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिन की केरमय कहिये सातनि से रहि
त होके निरले ये ॥ पुत्र लोभ कहिये लो
भ जो हे पर वस्तु विषे ममता को हो य जा
नके तजत न ये ॥ पुत्र स्नेह कहिये पुत्र
मित्र कलित्र कुटुंबादि कनि से नेह न
जतन ये ॥ ये से सम्य क् दृष्टी सत पु
रुष नि नके हृदये के ढा ल ही गु न
रूपी माल सोभत न ऊले ॥ सो से म्य क्
दृष्टी कहिये ॥ दो हा ॥ सुद्ध दृष्टि जिन की

॥७८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

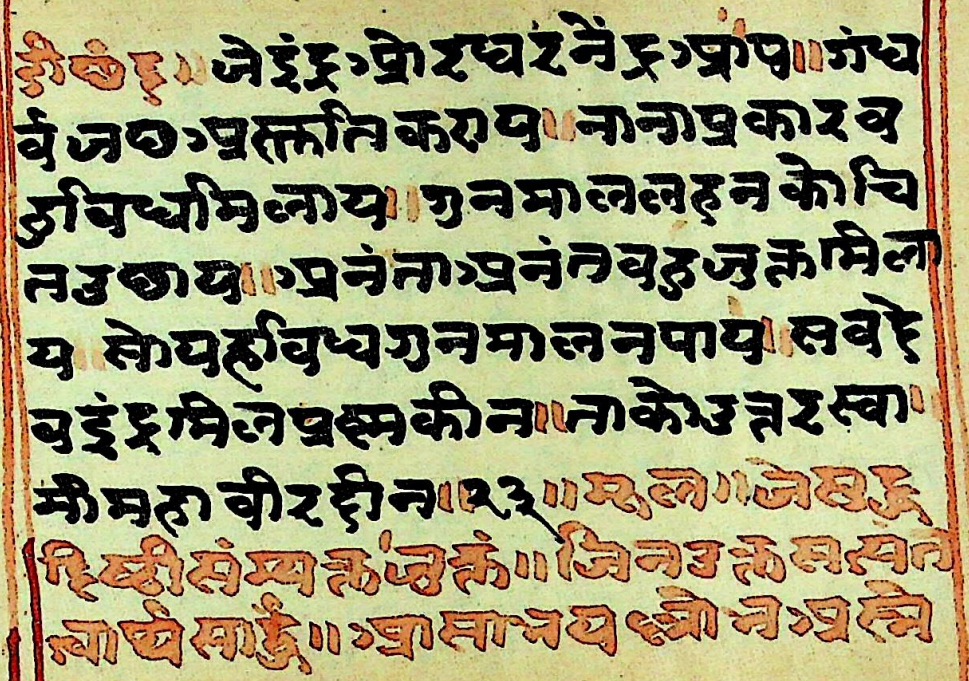

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसेनचारीचउगुणसासमाधं॥॥
तेसालहिछीहेकंठहलते॥सक्क
त्यगमीकथतेजिनेइ॥॥घ्रछी॥॥घ्र
वस्त्रीपरमगुरुइयासागरभव्यनको
उपदेसहेतभयेजिनस्वरूकेजेसुद्ध
हिछीजिनस्यउकेकहिये॥जिनजोहे
भगवानिनवचनेकहीहे॥जोवानीना
सेइरसेसम्यकहिछीकहिये॥सम्यक्
कीधारनाकेहेतसेनचहुतगुणानको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नई ॥ तेनर समयक जान ॥ तत्वन कीस
रधा कहे ते लहे मालगुन जान २७ ॥
चरचा रछह ॥ सुद्धदिष्ट जिन कीनई
निर्मल समयक दिष्टी कहिये ॥ जिन
कीवानी कीदिष्टता जिन के तत्व सर
धान लहिये ॥ प्रासा मय ग्रहतो त्र मो
क्ष ते नेठर चरचा यहे ॥ तिन के हृदे के
ठमे मालनिरमल सोभन चैहिये २८
॥ इलोजिन मत जेउ दिष्टी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीमा ॥ ७६ ॥

सम्यक्दृष्टी होय ॥ प्रवचन सीमा लंघि
न कोमिले मोक्ष तहे पुन सोय ॥ प्रव
चन्द्र ॥ जिन वानी को सम्यक्
दृष्टी जानहीं चरजो समकित सार ॥
वहु न गुन मानही ॥ तिन के हूहे कंठमा
न गुन सोनही पुन हूने ज्ञान हसि व ॥
लोक जिनेश्वर ने कही ॥ मूले ॥ संप्य
क्त सहु मिथ्यादिरक्ते ॥ मा जे न यग
रवजे यति क्ते ॥ तमा दृष्टे हे के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संग्रह होतभयो तेमालाहि कंठ हुलतं तेमालाहि कंठ कहिये तिनपुर सनके हुहे कंठमे माल गुण सोभतहे पेर मुक्त पवेसं कहिये तेपुरसमुक्त जोहे सिद्धनहा को गमनकरतभये प्रवचलहोके पुंतकालपर्यंत सुष रहे हे प्रावागमनकरहितभये सोयेसोक्षी प्रहंत वीतरागदेवनेक होहे २५॥ दोहा॥ जिनवानीके सरहते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ७८७॥

हे कंठरुलने नेमा नीहं कहिये नि
नकेहहे कंठमे माल्याके गुणसोने छे
जोमुक्तस्यगमीजिनहेव कथितं॥ते
पुरुषमुक्तजोहोसिद्धनाकोजाय
छे॥ कर्मनकेनासकेनाई प्रविचल
होके पुनेनकाल रहेछे एसोमोक्षी
नरागहेवनीहिंव्यधुनमे होकहोहे
जन्ममरणजरारोगयकारणी सक
लदुर्नयजाल्यनिवारणी समयसा

॥ ७७७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

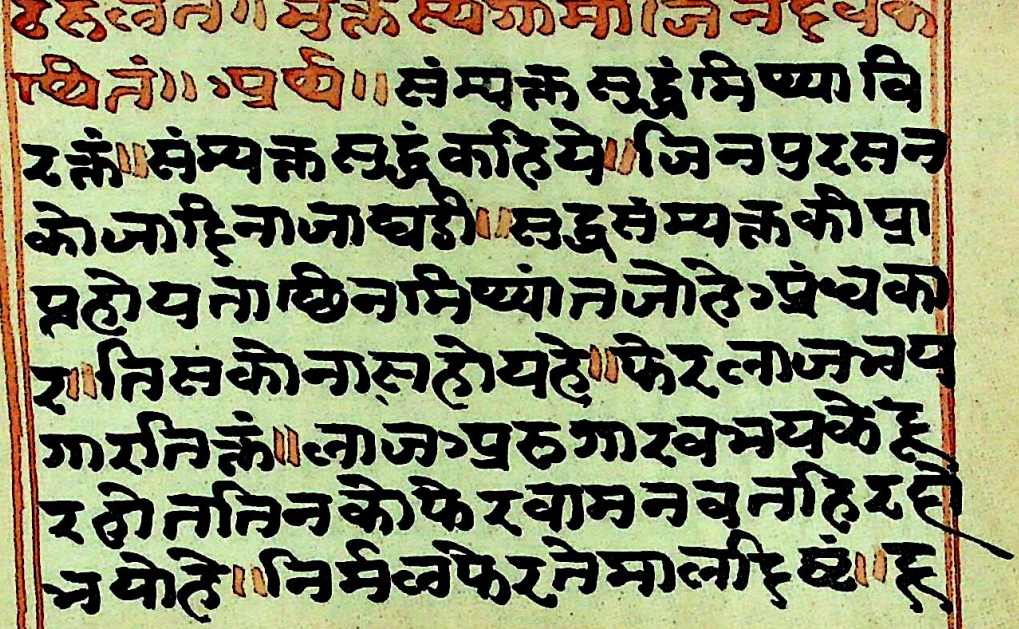

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वासिने॥ प्रचुरपुण्यमुपार्ज्यतमेस्वतं
त्रयपत्ता॥ प्रक्षते॥ कमक्रकेतकेन
कंकेतकीचपकै॥ पुन्नागजातिवास
सगंधकै॥ त्रयपत्ता॥ पुष्पे॥ प्रचुरपा
कसतामरसकोटकै॥ सरसविचित्रन
टितपात्रकै॥ त्रयपत्ता॥ नैवेद्ये॥ रत्न
दीपकज्योतिरंतमः॥ वटुचलंद्र प्र
ज्ञाजिनउत्तमै॥ त्रयपत्ता॥ दीपे॥ दृह
नध्रुपसद्धूपिवनद्रिग्मुषै॥ स्वहनध्रु
पविध्रुपससन्मुखै॥ त्रयपत्ता॥ फले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमठं परिपूजिये ॥ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं ह्रौं ह्रः ॥ स्व
त्रेभ्यो ॥ प्रत्रवनारवनारस्वधौषट् ॥ ॥ प्रा
हूनेन ॥ ॥ प्रत्रोनिष्ठनिष्ठठः ठः ॥ स्वा ॥ प्र
त्रे मम संत्रिहनोभव भव वषट् ॥ सन्नि
धापने ॥ ॥ गंगनांसिंधुहिमाचलनिर्गते
सहजसीतलसारसमुद्भवे ॥ भवपसं
तमलासिवकारणं जिनपदंगुरुसारह
रजन ॥ जले ॥ ॥ प्रगरवेंडुसुगंधसुचंद
नंनहिनमि जिनिमिश्रितलेपनेभव
पसा ॥ चंदने ॥ ॥ कमलसालि ॥ प्रधौतिनें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सखा॥ श्रीकृष्णकुमारकुंवरसमदेख
नतेपत्ने॥ तेसीपुनतेसीलिखीभू
लनाराखीजान॥ पुस्तरसहितसुधा
रलेफ्रेमेरीचुकप्रजान॥२॥ पुस्त
कश्रीसेठध्यारेलालकीसंथेवा
सेघ॥ मितिकार्तिकसुदी॥५॥सुध
वार॥संवत्॥१९३८॥॥
कार्तिकमासेसितेपक्षेसुधवारसम
चिते॥ हरीरामलिखितवासोंगरीस्यतेनच
न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिंतवचवणीपकवैरसवासकैंप्रस्त
नात्तनचोचकमोचकैं॥नवपसा॥फ
लेंं॥कर्मेंधनदहनपटकृतंकैंप्रच
टकेवलबोधप्रकासकैं॥नवपसा॥च
त्र॥पयसुचंदनमक्षतपुष्पकैंचारु
सुदीपसुधूपफलार्घकैं॥नव
पसा॥मठासिवकारणं॥जिनपईगुरु
साहरजनें॥२०॥ॐह्रीं श्रीं क्लीं नमः॥या
हणीपलकेहस्तानाहणीलिख्यते

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेमालदिछीहरै कंठसलितं ॥२८॥ जोचे
तनाजिनगुणाचेतनिस्वं ॥प्रचेतं
विनासीप्राणंचेतिकं ॥जिनउक्तस
यंसतत्वेपकासं ॥तेमालदिछीहरै
कंठसलितं ॥ ३० ॥ जेशुद्धस्यबुद्धस्य
गुणस्यरूपं ॥रागादिदोषंमलपुंजति
कं ॥जिनधर्मेपकासंतेमुक्तिःप्रवेसं
तेमालदिछीहरैकंठसलतं ॥२९॥ये
सिद्धनंतंतेमुक्तिप्रवेसं ॥ सोध्यंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरुरत्नवैडूर्यानचरित्रसूत्रं॥ मिथ्या
दृष्टिगाथाद्वयंचरित्रं॥ नेमानदृष्टी
दृष्टैकंठरुलितं॥ सम्यक्त्वसूत्रं कर्मवै
चित्र्यं॥ २७॥ यदाज्ञापिपाज्ञारुपंज्ञा
चेत्वं॥ रुचाप्रतीतंवेद्यानसूत्रं॥
प्राणातिनौदृमानत्रिकं॥ नेमान
दृष्टीदृष्टैकंठरुलतं॥ २८॥ प्रत्याख्ये
वंउवसंमचरित्वं॥ व्याईकसूत्रं जिन
जक्तिलाद्वं॥ मिथ्यानमेरुमलराद्रवंड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इयं गुरुमाला गृहीतं ॥ ये केचिन्मया
मसंमि कृतसङ्घे ॥ तेषामिह मोक्षं कांक्षि
नांजिनेंद्रं ३२ ॥ इति श्रीमाला रोहि
णी ग्रंथ जिनोद्धारणानंतरनंदिरचितै
यासमाउत्पन्नितो ॥ ३२२

लिख्यतंहरीरामभट्टजयत्सरामा
गेवसुकामवासेन प्रोहित
श्रीगुरुमहाजकीजेलोथ श्री श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi